अंतहीन वैतरणी

अंतहीन वैतरणी

डॉ. आभा पूर्वे

अंगिका संसद
सराय, भागलपुर

ISBN : ९७८.८१.९५७१७२.८.६

प्रथम संस्करण
२०२२

सर्वाधिकार ©
लेखिकाधीन

प्रकाशक
अंगिका संसद
सराय, भागलपुर
(बिहार)-८१२ ००२
E-mail : angikasansad@gmail.com

हरियाणा कार्यालय
वार्ड-३३, सेक्टर-२८
सरस्वती विहार, गुरूग्राम-१२२००२

आवरण-चित्र
www.pexels.com से साभार

मुद्रक
Das Printer
गोविंदपुरी, दिल्ली।

मूल्य
एक सौ पचास रूपये मात्र

Antheen Vaitarni
By Dr.Abha Purbey Rs.150/-

ई उपन्यास
ऊ सब स्त्री सिनी लेली
जे अंतहीन वैतरणी कें देखी भयभीत नै होय छै,
नै ओकरा पार करै के हौसलाहै छोड़ै छै

—आभा

उपन्यास के दोसरौं संस्करण लेली

जबें ई उपन्यास कें फेनु सें पढ़ी रहलों छेलियै तें लगलै, एकरों कथावस्तु केन्हौ कें गढ़लों नै लगै छै। हेनों घटना तें इखनियो घटी रहलों छै हर समाज के बीच। एक बच्ची रहें तें रहें, हेनों बच्ची तें घोंर सें लैकें समाज के बीच सैकड़ो कपसतें मिली जाय छै। यही सें ई कथा कें मनगढ़न्त मानवों ठीक नै होतै। जे ई कहानी हमरा सुनैलें छेलै, हुऍ सकै छै वहीं अपनों घरों के कहानी घुमाय-फिराय कें कही देलें रहें आरो ऊ घटना सिनी नें एत्है तखनी प्रभावित करलें छेलै कि 'अंतहीन वैतरणी' लिखै लें विवश होय गेलियै।

पहिलों दाफी तें ई उपन्यास भागलपुर से ही प्रकाशित 'नई बात' में छपलों छेलै। संपादक राजेन्द्र प्रसाद सिंह जी के प्रति आभार। बाद में डॉ. अमरेन्द्र जी नें ई सौंसे उपन्यास कें आंगी में प्रकाशित करलकै आरो पुस्तक रूप में भी।

ई सौभाग्ये कहों कि प्रकाशित होलै तें तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय अंगिका विभाग के पाठ्यक्रम में शामिलो करी लेलों गेलै।

ई बात नें हमरा एतन्है उत्साहित करलें छेलै कि बीस सौ पन्द्रहे में एकरों द्वितीय संस्करण लेली सोचलें देलियै।

खैर देरे सें सही, 'अंतहीन वैतरणी' के ई द्वितीय संस्करण आपनें सिनी के हाथों में छै। सोचलें छेलियै, यैमें कुछु परिवर्तन करी लियै, फेनु एकरा ठीक नै बुझी कें हू-ब-हू प्रकाशित करी रहलों छियै। कथानक भी वही, पात्र भी वही, भाषाओ वही।

-आभा पूर्वे

विजयादशमी
५ अक्टूबर २०२२

अंतहीन वैतरणी

—बस तोरा तें एक्के झकनी लागलों छौं कि ऊ घरों में हम्में आपनों बेटी के बिहा नै करें पारौं । हम्में पूछै छियौं, की खराबी छै ऊ खानदानों में ?

—कुछुवे नै । तैहियौ हम्में ऊ घरों में आपनों धिया कें नै दियें पारौं । गरीबी सें बढ़ी कें आरो कोय खराबी या दोष नै होय छै, बच्ची रों बाबू ।

—मतरकि गरीबी सें केकरौ खराब नै कैहलों जाबें सकें ।

—मगर गरीबी केकरौ खराब करें पारें, ई तें हुवें पारें नी ?

—सब्भे कें नै ।

—पर है की जरूरी छै कि हेकरा में सम्पत बाबू ही होतै । दरिद्री दर-दुखिया में भेद करले बिना केकरौ कैहियो ग्रासें सकें छै । सम्पत बाबू हरिश्चंद नै छेका ।

—जों तोरा यही लागलों छौं, तें जाबे दौ, हम्में लड़का कें धन-दौलत सें लादी देबै ।

—मतरकि धन-दौलत रों माथा पर चढ़ी कें सरस्वती तें नै ऐतै। सरस्वती के बिना तें लछमियो के गोड़ों में पंख लागलों रहै छै । आखिर कैन्हें लोगें लड़की कें पढ़लों-लिखलों लड़के रों हाथों में थमाय छै, मुरुख छै ?

—तें, लड़का के पढ़इयो देलों जैतै । आबें तें मानी जा ।''

बच्ची के बाबू जानकी प्रसाद नें आपनों दोनों कान पकड़तें, हुएँ कहलकै तें बच्ची माय मुस्कैतें घरों सें बाहर निकली गेलै ।

बच्ची माय के जैथैं हुनी हाँक दै कें बच्ची कें बुलैलकै ।

—बेटी, तोहें पढ़ली-लिखली छों । आपनों हित-अहित खूब बूझें पारें छौ । आबें जोन लड़का सें तोहें बिहैली जाय रहलों छों तहुँ जानै छौ, यै संबंध में तोरों की राय छौं ?

—माय-बाबू सपनौ में धिया रों अहित नै सोचें पारें । बेटी तें बाबू कन अतिथि रं होय छै । आय यहाँ, कल कहाँ । अतिथि के तें हमरा सिनी देवता नी मानै छियै ? फेनु कुछु बात हम्में केना सोचें पारौं।

—धन्य-धन्य बेटी ! बेटिये एत्ते बाबू-माय पर विश्वास करें पारैं।

—विश्वास तें स्नेह आरो ममता सें जन्मै छै । है हमरों आस्था तोरों ममतै के तें प्रतिदान छेकै । एक संतान, विश्वासे सें तें माय-बाबू रों ममता सें कुछु उऋण हुवें पारें । कहतें-कहतें बच्ची रों आँख एकदम डबडबाय उठलै ।

—बेटी, है आँसू ? तोहें वकील जानकी जी के बेटी छेकी । आँसू के यहाँ की जरूरत ।

—क्षमा करियों ! बेटी तें बेटिये होय छै नी ! आरो वैनें ढलकी ऐलों लोर कें अँचरा सें पोंछी लेलकै ।

—लेकिन हमरों तें यही इच्छा छै कि तोहें बेटा के कलेजा लै कें आगू बढ़ों । आँसू आँखी पर आबी कें दिन्हौ में आगू के रास्ता दिखावें नै दै छै, बेटी; तोरा जिन्दगी मैं बहुत आगू चलना छौं, हमरे नाँखी । पत्थर रं दिल बनाय कें चलै लें लागतौं । जीवन कें पुरुषार्थमय करै वास्तें स्त्रियो कें कुछ स्त्रीत्व तेजै नै लागै छै ।

बच्ची कुछुवो नै बोललै । जानकी बाबू देखलकै कि ओकरों आँखी में पुरैनकै विश्वास आरो चमक आबी चुकलों छेलै ।

तें जानकी जी नें ओकरा आपनों नगीच बैठैतें कहबो शुरू करलकै ।

—बेटी, तोरों मायके तें जिद यही पकड़लें छौं कि गरीबों घरों में धिया नै दियें पारौं । मतरकि नै तें तोहीं, नै तोरों माय जानै छौं कि हमरों अतीत की रैल्हों छै । याद करतै सौंसे देह दुखें लागै छै । कहै लें तें नै चाहे छियौं लकिन सुनों—तोरों दादा दू भाय छेलौं । दूसरा के दोभियों तोरों दादी नै आपनों बिहैली बेटी कें दही कंतरी मैं जेवरात भेजना शुरू करलकौं । ऊपरों सें जमैलों दही । तें घरों के सबटा लक्ष्मी बाहर भै गेलै । बड़का दादा कें धनों सें कोय मतलबे नै छेलौं, एकटा मेम राखी लेलें छेलौं । जे सेर भरी सोना के दाम ऐलों बिना मूँ में दतवन नै दै छेलौं वही घरों सें लछमी हेनों गेलै कि तोरों आपनों दादा एक मन गेहूँ पीसै छेलौं, तें हमरा सिनी खइयै । हमरो बीहा जहां भेलै, एकदम दरिद्र घराना में । की कहियौं । है जे सम्पत देखै छौ, तोरों जन्मों के बादे सें । दरभंगा महाराज के वकील कें काम करयै तोहें पेट में छेली । हुनी पुछैलकै कि चाहियों ? जमीन मांगलियै । जानै छौ, मधेपुरा के डेढ़ सौ बीघा जमीन हमरों नामों लिखलकै आरो तोरों जनम होतें-होतें तें घरों में धोंन उगटें लागलै । वहीं सें तोरा हम्में लछमी बेटी कहै छियौ । धनों सें कत्तो गरीब घोंर रहतै तोरों गोड़ पड़तै धोंन बरसतै ।

बच्ची बात कें समझी जरा लजाय उठलै आरो बाहर निकली गेलै । जानकी बाबू के चेहरा पर खुशी दौड़ी गेलै ।

:: २ ::

सौंसे तारापुर में हल्ला छै कि जानकी बाबू के बेटी सें सम्पत बाबू के पैहलों लड़का के बीहा लागी रैल्हों छै । सम्पत बाबू कें आबें सम्पत मिलतै आभी तांय तें आपनों नामों के हंसिये उड़ाय रहलों छेलै।

—पर बीहा रुकौ पारें ।

—से की ?

—सुनै मैं ऐलों छै कि लड़की के लड़का सें कुंडली नै मिलै छै।

—तबें की होतै ?

—होतै की । सुनै छियै सम्पत बाबू बोली रहलों छै, शादी तें होने छै । नै बड़का सें तें छोटका सें । मतरकि हेनों लछमी नै छोड़लों जाबें पारें । केन्हों कें भी नै ।

—तें की लड़की वाला मानी जैतें ?

—सुनें मैं तें ऐलौ छै की लड़की वाला कें भी दूसरे लड़का पसंद छै ।

सुनै मैं यहू ऐलों छै की जानकी बाबू के कोय लड़का लड़की नै बचै छै से शादी रुकौ पारें । कै-कै सन्तान मरी चुकलों छै । यहू लड़की तें मरी कें बचलों छै । कत्ते होम-हाम पर जीवित छै ।

—हम्मू सुनलें छियै कि लड़की के दादा नें पूर्व जनम मैं एक वेश्या के पेट गिरवैलें छेलै, सेहे कारने हिनकों ई जनमों मैं कोय संतान नै बचै छै । सुनै में ऐलों छै कि हेकरों घोसना जोतिश जी नें जानकी जी कें शादिये वक्ती करी देलें छेलै ।

—तें की सोचै छों, शादी रुकी जैतै ?

—सपनों में नै । सम्पत बाबुओ पंडित सें बुझलें छै । लाखो मैं एक गुनवन्ती लड़की छै ।

तबें तें है बीहा होले होलौ समझों ।

खेसाड़ी साव नें मूड़ी हिलैतें हुवें आरो आगू कहलकै ।

—दू राय नै । जानकी बाबू बड़के कांग्रेसी नेता छेकै । सम्पत बाबू के इज्जत बढ़तै अलगे । अरे आय कल तें वही बड़का आदमी जेकरो परिचय संबंध बड़का नेता सें नै तें नामियो नामी गुनी पानी के मोल बिकाबै छै ।

—से तें ठिक्के कहै छौ । सम्पत बाबू सोचतें होतें, नै कुछु तें बेटा कें नौकरी तें मिली जैतों । तोहें तें हुनकों मनों के बात बोली

देलौ। पटवारी मड़रों नें समर्थन मैं हामी भरलकै ।

सौंसे गाँव मैं यही रं के बात होतै रहै, कोय कुछ कोय कुछ ।

गाँव के बच्चा सिनी उछली-उछली गाबै,

सेमल भैया रों बीहा होतै,
भागलपुर के कनियाय लानतै,
कनियाय छेकै लाल परी,
भैया के जैतें भाग संवरी ।

:: ३ ::

बच्ची के शादी होवों तें भै गेलै । सम्पत बाबू के बड़का बेटा सेमल सें । पंडिते कहलकै, बड़का बेटा के रहतें छोटका सें बीहा दोखपूर्ण होतै । दोखपूर्ण छै तें हमरों बेटी पर असर हुवें पारें । बच्ची माय कही उठलै ।

—तोरों तें मतिये उल्टा चलै छौं । ई कही कें जानकी जी नें आपनों पत्नी कें डाँटी देलें छेलै ।

ठीक लड़की आशीर्वादी के दस रोज पहिले बच्ची टायफाइड रों शिकार भै गेलै । बाल उड़ी कें चानी निकली ऐलै । देखै सें जेना एकदम सन्यासी ।

—देखलौ नी, कहै छेलियौं ।

बच्ची माय गुस्सा से लाल-पीरों भै रैल्ही छै ।

—आबें खूब करों बीहा । पहलें बेटी रों जान नी बचावों !

बच्ची माय धीरज रखों ।

जानकी बाबू घबरैलों बोली मैं बोलै छै ।

—आभौ धीरजे राखै के समय छै ? देखै नै छौ; छौड़ी सूखी कें

केन्हों बनी गेलों छै ! एकदम कांटों ।

—बच्ची माय, जोतिष की कहलें छेलौं, बच्ची घनिष्ट राशि रों छेकै । फेनु घबड़ैबों की ? धन कहीं दुख दैलें आबें छै ?

कहतें-कहतें जानकियो बाबू रों आँख डबडबाय गेलै । ई देखी कें तें बच्ची माय हरहराय कें कानी पड़लै । कोठरी रों भीतर सेवा करवैया के भीड़ जुटलों छेलै । होम जाप अलग !

बनारस रों पंडित मंगैलों गेलों छेलै, जाप वास्तें । आखिर चालीस दिनों रों बाद बच्ची खटिया पर सें उठलै । उठलै तें एकदम बदरूपे होय कें । माय-बाबू कें चिन्ता हुवें लागलै कि कहीं बीहा नै भंगटी जाय । तै करलों गेलै कि बच्ची कें लै कें भुवनेश्वर चली देलों जाय । वांही से सेहत बनला पर ऐलों जैतै ।

ठीक जोन दिन जानकी बाबू परिवार साथें भुवनेश्वर निकलतियै, ओकरों एक दिन पैहलें सम्पत बाबू चार आदमी लेलें पहुँची गेलै लड़की कें आशीर्वादी करै लें ।

जानकी बाबू नें बहुत टालै रों कोशिश करलकै मतरकि हुनका सिनी एक नै मानलकै ।

जानकी बाबू नें कारण साफ-साफ राखलकै तें सम्पत जी कहलकै । अबें बीमारिये कारण तें हेनों होलों छै, हेकरा में की छै । हमरा सिनी दिन बनाय कें ऐलों छी घुरै नै पारौं ।

बच्ची रों माय-बाबू के भी मने रों बात होय रैल्हों छेलै, से जानकियो बाबू जादा विरोध नै करलकै ।

कानो-कान खबर फैली गेलै कि बच्ची रों आशीर्वादी होय रैल्हों छै । जनानी सिनी के ऐंगना मैं जुटवों शुरु भै गेलै ।

मुहल्ला भरी के नामी-गरामी आदमी जुटी ऐलै । सोंर-सवासिन अलगे घोर गन-गन करें लागलै । सम्पत जी रों खुशी माथा पर चढ़ी नाची रैल्हों छेलै । आशीर्वादी के काम खत्म भेलै तें सम्पत बाबू नें जानकी जी रों हाथ धरतें कहलकै।

—आबें बीहा मैं देर नै करियौ ।

—लड़की के देह लागै तांय तें रुकै लें पड़ै ।

—है की बोलै छियै जानकी बाबू बीहा तें यही महिना में होय जाय तें अच्छा ।

—अरे ई महीना पूरै में तें दसे रोज बाकी छै । नेतों ल्यौन, हेकरै में तें बीस रोज लागी जैतै । जानकी बाबू रों बेटी के बीहा छेकै सम्पत बाबू ! ओकरों में लछमी बेटी के ।

—से बात तें ठीक छै मतरकि शुभ काम जत्तें जल्दी हुवें सेहे ठीक । पंडितो यही पक्ख शुभ बताय रेल्हों छै ।

—मजकि एतना जल्दी केन्हौं संभवे नै छै ।

—नै तें अगला महीना में तें कोय्यो हालतों में करै लें पड़तौं। आखरियो महीना ।

बात बहस में आखिर यही तै भेलै कि शादी अगला महीना फागुन में करलों जैतै । सम्पत जी के जोर के सामना जानकी बाबू कें झूकै लें पड़लै ।

:: ४ ::

आशीर्वादी सें ठीक चालीसवां दिन बच्ची के बीहा होय रहलों छेलै । कहलगांव, मुंगेर, सहरसा, दरभंगा कहाँ-कहाँ से नै लोग जुटलों छेलै । जेना छोटों-मोटों बौंसिये मेला लागी गेलों रहै ।

शहर के सब नामी रोसैया आरो हलवाय मंगैलों गेलों छेलै, मुंगेर से बाजा मंगैलों गेलों छै । कागज के घोड़ा पर नांचैवाला अलग। घरों के बाहर सड़कों तांय रौशनी सें सजैलों गेलों छै ।

गीत-नाद के झंकार आकाश छुवी रहलों छै । जनानी के कंठों सें लय उमड़लों आबी रहलों छै ।

हरिहर बाँस कटैयी हो दादा !
ऊँचकाय मँड़वा छरावों !
आवी पड़लै दादा हमरों बनिजवा,
दूसतौ मंडवा तोहार हो ।
एक ठियाँ बैठलों नौआ बराहमन,
मांझे ठियां बेठलों राजा दुलहवा,
आबें रों केकरों कन्या दान ।

जनानी रों रागों मैं राग मिलैतें हुवें तुतरुवाला भी गावी रैल्हों छै, पीं पी पी ई...।

बारात के द्वार लगहौं पीपिहिया बाजा रों आवाज आरो तेज होय उठलै । बच्चा-बच्ची दौड़ी पड़लै सराती तरफों के सब सम्मानित लोग सड़कों तक खातिरदारी मैं निकली ऐलै ।

जनानियो सिनी गल्लों खोली कें गाना शुरु करलकै,

नदिया रों तीरें-तीरें अइले बरियाती,
चिन्हलो नै जाय छैं गे बेटी आपनों दामाद ।
सबही बरतिया रों लाली लाली पगड़ी,
चिन्हलों नै जाय छै गे बेटी आपनों दामाद ।

मतरकि कानाफुसियो कहू होय रेल्हों छै,

—जे कहों, बाराती सजी-धजी कें नै ऐलों छै,
—जानकी बाबू रों नाम हंसाय देलकै ।
—भारी कंजूस परिवार बुझाय छै ।
—केना हेनों परिवारों में जानकी बाबू बच्ची रों बीहा लगैलकै?
—लड़का देखी कें ।
—आरो सब तें नै कहै पारौं मजकि देखै मैं तें एकदम राजकुमारे लागै छै लड़का !
—एकदम बच्ची मैं मेल खायवाला ।

शादी से दू दिन बादो बाराती कें रोकलों गेलै । बनारस सें खास करी कें मंगैलों गेलों इत्र के खुशबू मुहल्ला भरी में उड़तें रैलहै ।

नाच-गान में जरियो कमी नै ऐलै, नै भोज-भात में एक्को दिन कमी करलों गेलै । मुहल्ला-मुहल्ला में चर्चा छै ।

—बीहा तें बहुत्ते देखलों मतरकि है रं के नै ।

—परो परिजन कें गोतिये रं मान-मर्यादा मिललै । के करै छै ?

—जी खोली कें लड़का पक्षों कें देवे करलकै,

—दस ठो तें खाली लड़के कें सोना के अंगूठी मिललै भारी-भारी।

—तीन भर सें ऊपर के अंगूठी छेकै ।

—बच्ची कें तें पच्चीस भर सोना रों जेवर मिललों छै, तीन किलो चांदी के अलग ।

—आरो एक बात जानला कि नै ?

—की ?

—लड़कावाला तरफों सें एक्को पैसा जेवर नै ऐलों छै । एकदम खूंगटें बुझाय छै ।

—अरे समधी जी कें गारी दै छौ !

—समधिये कें तें गारी दै के हमरा सिनी कें हक छै ।

—समधी साथें कुछुवों करलों जावें सकें । की ?

एक जोरदार हंसी मड़वा में गूंजी गेलै ।

जखनी बारात बिदाय हुवें लागलें तें सबके आँखी में लोर छेलै। की जनानी, मरदानौ के आँख भींगी गेलै ।

दुबारी पर ठसमठस औरतों के भीड़ ।

सब्भे के अंचरा आँखी पर छेलै आरो सब्भे के मुँहों पर बस एक्के गीत,

कथी बिनू सून भेलै बाबा के बगीचबा ?
कथी बिनू सुन भेलै दादा के अटरिया ?
कोयलो बिनू सुन भेलै बाबा के बगीचवा
धिया बिनू सुन रे भेलै दादा के अटरिया
ऐंगना बूलिये बूलिये अम्मा रोवे ऐंगना ।

आरो जखनी बच्ची डोली में बैठलों छेलै तखनी तें बच्ची के

बाबुओ आपनों कपसवों नै रोकै पारलकै । अजीब करुण दृश्य खाड़ों होय गेलों छेलै ।

:: ५ ::

बच्ची जबें ससुराल उतरलै तें ओकरों खातिरदारी करै वास्तें खाली ओकरों एक सासें खाड़ी छेलै, आरो कोय्यो जनानी नै । बच्ची नें आपनों घूंघटा के नीचें सें सब कुछ कोनराय कें देखलें छेलै । वैनें मनों मैं कत्तें-कत्तें बात सोचलें छेलै, कत्तें-कत्तें अरमान लैकें बाबू के द्वारी सें डोली पर चढ़लों छेलै मतर कि ससुराल के द्वार लगथै ओकरों सब सपना टूटी-टूटी कें बिखरी गेलै । गलसेदी करै वास्तें बस ओकरों सासे आगू दिस बढ़लों छेलै । न कोय गीत गावै वाली आरो नै तें कोय कनियाइन कें उतारै वाली । बच्ची के मनों मैं एक बार होलै कि ऊ घूमी कें फेनु डोली पर बैठी जाय आरो कहारों कें कहै डोली घुमाय लेली । मतरकि बच्ची है सब कुछु नै करै सकलकै खाली ई छोड़ी कें कि ऊ चुपचाप गलसेदी करैला के बाद द्वारी के बाद घरों के ऐंगन दिस बढ़ी गेलै ।

कन्हौ, कहुँ, कुछुवे बीहा रं नै लागी रैहलों छेलै । बस ऐंगना मैं एक बड़ों रं पेट्रोमेक्स के रोशनी सन-सन के आवाज के साथें होय रैहलों छेलै । ऐंगना के उत्तरवारी ओहारी पर दस ठो आदमी खाना खाय रैहलों छेलै । बस बीहा के नाम पर ऐतनै लोग वहाँ इकट्ठा छेलै । बच्ची नै जानलकै कि ससुराल में कनियाइन के साथे की रस्म-रिवाज करलों जाय छै । ओकरा आपनों माय-बाबू पर काफी गोस्सा होय ऐलों छेलै । आखिर की देखी कें बाबू हमरा ई घरों में बिहाय देलकै ? जबें ऊ कुंवारी छेलै तें आपनों कत्तें सखी सहेली के बीहा देखलें छेलै,

टोला-पड़ोसी में ऐलों कनियाइन के रस्म-रिवाज । डलिया में पैर रखवाय-रखवाय कें सुलक्षणा कें घोंर करलों गेलों छेलै । खाली सुलक्षणै के बात नै छै । चंदा, नीलम, सुरेखा, जबें दुलहिन बनी कें आपनों ससुराल ऐलों छेलै तबें कत्तें साज-बाज आरो हुलासो के साथ सें ऐंगना ओकरा सिनी कें करलों गेलों छेलै । यहाँ तें बाजा के नाम पर एक कंडाल भी नै छेलै ।

बच्ची आबें करौ की सकें छेलै । आबें तें जेना जिनगी कटना छेलै होनै कें कटतै । बच्ची मनेमन आपनें कें ऊ स्थिति वास्तें तैयार करी लेलकै । नै दुलहिन तें घरों के पुरानों-सुरानों जनानिये नांकी । जोन दिन से बच्ची ससुराल में पैर धरलें छै वही दिनों सें दुल्हो के घोंर ऐवो बंद होय गेलों छै । बच्ची के ई बातौ कें लैके घोर आचरज छेलै, मतरकि एकरो सें बढ़ी कें ई बातों के छेलैं कि कोय्यो है चीज कें लैकें घरों में परेशान नै छेलै । वैंने जानलकै नै कि सुहाग रात केकरा कहै छै आरो केकरा कहै छै पति के सामना लजैबौ, मान करबों । ऊ तें ऐला के बाद सें परित्यत्त के दुख उठाय रहलों छेलै । आखिर नै रैहलों गेलै तें वैंने सास सें जायकें पुछलकै, हिनी कहीं बाहर गेलों छै की ?

हमरा की मालूम । बाहर गेलों छै की घोंर । कहूँ गेलों होतै, तें घुरिये ऐतै ऐकरा मैं औनाबै के की बात छै !

सासु के हेनों तीक्खो वचन सुनी कें बच्ची के छाती चलनी रं होय गेलों छेलै । वैं मने-मन सोचलकै, एक तें लाज छोड़ी कें कुछ पुछैलें गेलां । आखिर पुछवों करतियै केकरा सें, घरों मैं जनानी के नामों पर एक सास छोड़ी कें आरो छेवे करै के । ओकरों पर सासू के हेनों जरलों वचन । बच्ची के मनों मैं होलै कि ऊ पीछू बाड़ी दिस इनारा में धौंस दै दै । हेनों जीत्तो रैहबों सें तें मरबे अच्छा । मतरकि मरना एतना आसान छै ? मनों में कत्तें-कत्तें इच्छा बसलों रहै छै आदमी के जे आदमी कें मरौ लें नै दै छै । बच्ची सोचलकै, आखिर अभी वैं देखलै की छै । जों दुख देखना छै तें खुली कें देखना अच्छा । फेनू यहू के कहें पारै कि हुनी हमरा सें गोसैये कें घोर नै आबी रहलों छै । आखिर

हम्में करल्है की छियै ? आभी तें दुओ बात मुंहों सें नै है सकलें छियै। तबें अपमान करै के बाते कहां उठै छै । कहीं हिनका हमरा सें बीहा नै करै के इच्छा छेलै ? कहीं आपनों माय-बाप के जोर-जबरदस्ती से तें है बीहा नै करी लेलकै । बच्ची के मनों में पले-पल शंका के बुलबुला उठै आरो फुटी जाय । वैं मने-मन शंका सुलझावै आरो एक शंका सुलझवों नै करै कि तखनिये दूसरा उठी जाय । हेने मानसिक हालतों में वै आरो कै दिन काटी लेलकै ।

:: ६ ::

ससुराल ऐलों बच्ची कें आय पनरमा दिन होय रैहलों छै । ओकरों खुशी कें कोय ठिकानो नै छै । कैन्हें की ओकरा खबर मिललों छै, ओकरों पति लौटी ऐलों छै । सांझिये से वें आपनों कोठरी मैं अपनों पति कें आवै रो इंतजार करें लागलें छेलै ।

रात के ग्याह बजतें होतैं । जखनी सेमल लौटलै । ऐतैं ही उ बच्ची के कोठरी मैं सीधे घुसी गेलै जेना ओकरा पता रहै कि बच्ची कोंन घरों मैं होतै । घर के सब लाग निभोर सुती चुकलों छेलै । पता नै सेमल केना फाटक खोली कें ऐंगना ढुकलों छेलै । बच्ची यै सब बातों पर अभी आरो सोचवे करतियै कि तखनिये सेमल बिछावन पर सें लेटले लेटले कहलकै, अरे अभी तांय तोहें जागी रहलों छौ । कथिलें ? कि हमरा लें ? तें बेकारे जागी रैहलों छों ।

सेमल सें हेनों खुरदरों वचन के आशा बच्ची कें नै छेलै । आबे तें ओकरों बचलों-खुचलों हृदय-रस भी सूखी कें रेत में बदली गेलै । ओकरों मोंन कैन्हों-कैन्हों करें लागलै । सेमल के हेना रूखों वचन सुनै वास्तें ऊ कभियो तैयार नै छेलै । से वैं ने आपनों दोनो हाथ दोनो

कानों पर राखी लेलकै, ताकि आरो कोय रुक्खों बात वैं नै सुनें सकें। कानों पर हाथ रखतें देखि कें सेमल नें उठी कें बैठते हुवें कहलकै ।

कि कान में कोय तकलीफ छौं ? जों हेनों बात छेलै तें माय कें कहलों कैन्हें नी गाँव के कोय वैद्य बुलाय देतियौं । दुए पुड़िया में तें सब रोग पार ।

बच्ची नें कभियो ई चीज के कल्पना नै करलें छेलै कि आदमी हेनों रुक्खों हुवें सकें छै । ओकरों मोंन हेने करै लागलै कि ऊ जोर-जोर से चिल्लावें लगे । आरो कहै कि सेमल जों तोहें हेने पत्थर दिलों के छौ तें हमरा सें बीहे कथीलें करला ? वैंने कुछु जवाब नै देलकै। बच्ची के कुछुवो जवाब नै पाबी कें सेमल आपनै उठलै आरो ओकरों हाथ पकड़तें हुवें बिछौना पर लेटाय देलकै, ई कहतें हुवै,

सूती रहों आबें तें बिहान होलै पर कुछ करलों जाबें सकै । आराम करला सें दरदो कुछ कम होय जैतौं ।

आरो ई कहिकें सेमल स्वयं उलटी कें सुती रहलै ई कहतें हुवें कि ऊ काफी थकी गेलों छै । गाड़ी खराब होय गेला के कारण पांच कोस पैदल चली कें आवै लें पड़लों छै ।

आरो ठीके में देखथैं-देखथैं सेमल खर्राटा लियें लागलै, घर्र-घर्र। जेकरों आवाज में बच्ची के सब सोचलों-विचारलों संगीत विहीन हुवें लागलै ओकरा लागलै कि ओकरों चारो ओर युद्ध रों नगाड़ा बजतें रहें सेमल खर्राटा तै हेने छेलै। उ एत्तें घबड़ाय उठलै कि ओकरा लागलै जेना वें झकझोरी सेमल कें जगाय देतै आरो कहतै—भगवान वास्तें तोहों दूसरों कोठरी में चल्लों जा आरो हमरा यहीं अकेला छोड़ी दा, जियै लें। शायद ई कहै वास्तें उठियो कें खाड़ी भै गेलै । मतरकि ओकरा सें कुछुवो नै कहलों गेलै । बस कुछ कहै के कोशिश में ओकरों आँखी सें खाली लोर टप-टप गिरतें रहलै । कखनी तक, है कोय नै कहें पारें ।

भोरे सेमल उठलै तें वैं बच्ची कें आपनों गोड़थारी में जुतलों पैलकै । ऊ उठी बैठलै आरो बच्चियो कें जगैतें हुवें कहलकै,

सुनों, हम्में बाबू के कामों सें बाहर जाय रैहलों छी । वैद्य सें

दवा मंगवाय लियों ।

लेकिन तोहों लौटवा कखनी तक ? बच्ची नें धीरें सें पूछलकै।

हमरों लौटै, नै लौटै के तोहें चिन्ता नै करों।

चिन्ता केना नै करना छै । आन मरद के बात तें नै छेकै, तोहें हमरों पति छेकों । तोरों आबै जाबै के खबर हमरा होनै चाहियों ।

तें तहूँ ई बात जानी ला, हमरों आबै-जाय के खबर आय तक न कोय रखलें छै न कोय राखतै ।

मरद स्वतंत्र होय के ई धरती पर जियै छै, स्वतंत्र होय कें मरै छै । शादी होला के मतलब है नै होय जाय छै कि हम्में तोरों गुलाम होय गेलियौं । आरो हमरा हर काम तोरा जानकारी दै कें करै लें लागै।

आरो ई कहिकें सेमल चुपचाप कोठरी सें बाहर ऐंगना मैं निकली ऐलों छेलै । एक बार वें घुरी कें बच्ची कें देखलकै पर तखनिये ऊ ऐंगना से बाहरों निकली गेलै एकदम आंधिये नांकी । बच्ची के आँखों मैं जेना मुट्ठी-मुट्ठी भर धुरदा झोंकते हुऍ कि ओकरा कुछ भी दिखाय नै पड़ें लागलै । ऊ थकथकाय कें वही खटिया पर बैठी गेलै । सोचें लागलै आपनों भावी जिनगी के बारे मैं, केना कें कटतै आकरों हेत्तें पहाड़ हेनों जिनगी जों ओकरों पतित हेनै कें व्यवहार करतें रहलै?

:: ७ ::

बच्ची धीरे-धीरे आपनों ससुराल के बारे में जानना-सुनना शुरु करी देलें छेलै । ओकरों पास गामे के एक दाय आबे छै, ओकरों देह-हाथ जोतैलें । देह-हाथ जोतै बकतियै ऊ दासी बीचों के बात बताय छै ।

—तोहरों ददिया ससुर बड़ी सम्पत वाला छेलौं । धरम-करम भी

खूब करै वाला यै लेली भगवाने हुनका सम्पतियो खूब देलें छेलै दानियो कम नै छेलौं । जब तक जिन्दा रहलौं, दान-धरम करतै रहलौं । सेहे कारण छेलै कि जबें हुनी मरलौं, तें गांव टोला के केकरों नै आँख चूलै! कि कहियौं कनियाइन हुनकों सम्पत जोगाय के तोहरों ससुर नै राखै पारलकौं ।

—से कि भेलै ? बच्ची नें जानकारी लेली पूछलकै ।

—ओत्तें तें हम्में नै बतावै पारवौं कनियाइन मतरकि धनो-दान धरमे सें रहै छै । लछमीयो आदमी के स्वभावे देखिकें रैल्हों । तोरों ससुर तक अधिकार ऐतें-ऐतें तें घरों के रंगे बदली गेलै । भागो होय छै केकरों-केकरों । तोरों ससुर जैतै धोन के बढ़ाय लै सोचै छौ ओत्ते लक्ष्मी हुनका सें दूर हटें लागै छै । पूरबे जनम के भाग कहों ।

बच्ची नें दैये के मुंहों सें ई जानलकै कि ओकरों सास कत्तें बोलबक्का आरो भारी कैयां छै । केकरो नै गुदानै वाली । दैयें बच्ची के बतैलकै, सासु से दूरे रहै के नै तें एक्को करम बाकी नै छोड़ै पारें । आरो वही दिनों सें बच्ची के मनों मैं जे डोंर घिरना बैठलै तें जिनगी भर बैठले रहलै । है बात नै छेलै दाय नें बढ़ाय-चढ़ाय के कहलै छेलै, मजकि वैं जे, भी बतैलें छेलै सासु के बारे मैं कम्मे बतैलें छेलै । साल पुरतै नै पुरतै ओकरों सामने सास रों खारों स्वभाव उबटी-उबटी कें आबें लागलै ।

:: ८ ::

माघी पूर्णिमा छेलै । जाड़ एकदम बाघे नांकी चारो तरफ गुर्राय-गुर्राय के आदमी कें निगलें लागलों छेलै । बूढ़ों-पुरानों वास्तें तें जेना कें परलय आवी गेलों रहै । अच्छा-अच्छा धार्मिक लोगो के नहैबौ

आरो धरम करबों छुटी गेलों छेलै । रजैय्ये तरों से मंत्रोच्चार हुवें आरो बिछौने पर बैठलों-बैठलों खाना के व्यवस्था । बच्ची कें आबे घरों के सब काम करै लें लागै । जहां तक सेमल के बात छेलै ऊ तें घरों में रहबे नै करै, कि बच्ची कें एत्तें काम करै सें मनौ करतियै । रैहबो करतियै तें की । कबें बच्ची के सुख-दुख के बारे में वै सोचलें छेलै । जे आय सोचतियै !

माघ के ठंडा अबकि पूसो सें ज्यादा बढ़ी गेलों छेलै। हांड़ तक में ठंडा घुसी-घुसी कें दलकाबें लागलें छेलै आरो हेनो में बच्ची कें घरों के सब काम करै लें पड़ै । खाना बनाना सें लै कें सबकें खाना खिलाय तक के काम ओकरों माथा पर । ठंडा सें बचै वास्तें एक बहुत पुरानों सौल ओकरों देहों पर पड़लों रहै । बच्ची आपनों दादी नानी सें कहानियों सुनलै छेलै कि केना कें सासें पुतोहू कें सतावै । ओकरा आपनों बेटा सें चुरबावै । तबें तें बच्ची कें यही लागै कि नानी-दादी झूठ बालै छै । कहूँ हेनों हुवें पार कि एक सांय आपनों माय के कहला पर आपनों जनानी के पीटें । मूड़ी तक काटी लै ।

सीतलहरी में काम करतें-करतें ओकरा आपनों नैहर के बुढ़िया मौसी के ख्याल आबी जाय जे जांतों पीसे वक्ती गीत गावै । जेकरा में एक बहू के कहानी छै, केना कें ओकरों सास बीमार होय के बहाना करी कोठा पर जाय कें सुती रैहलों । जबें ओकरों सांय ऐलै तें पूछलकै हमरों माय कहाँ छै ? कनियैनी कहलकै—कोठा पर सुतलों छै । मिजाज खराब छै । बेटां जाय कें पुछलकै, की होलों माय ? तें माय कहलकै, हमरों मोंन ठीक नै । बेटां कहलें छै हमरों रोग तभिये खतम हुवें पारै, जबें कि तोहें आपनों बहू के करेजों हमरा खाय लें दे । माय के बात सुनी कें बेटां आपनों बहू सें कहलकै, तोहरों नैहरा में उत्सव होय रैहलों छौं से तोहों आपनों नैहरा जा । हम्में एक गो आदमी लगाय दै छियौं आरो सांय नें ओकरों साथें एक गो कसैया लगाय देलकै जे घनघोर बीजूवन सें गुजरते ओकरा काटी कें ओकरों करेजों निकाली लेलकै । ऊ करेजों कसैयां ओकरों ससुरार पहुँचाय देलकै, जेकरा देखथैं सास

हलफलाय उठलै आरो दलानी सें उतरी बेटा कें करेजों सें लगाय लेलकै। ठंड में ठुठरी कें काम करै वक्ती बच्ची कें रही-रही जतसौर के ई कहानी याद आबै छै । ऊ रही-रही बड़ी डरी जाय । बड़ी उदास होय जाय । मतरकि ऊ करौ की सकै छेलै । डोंर-भय पीवी-पीवी बच्ची सोसराल मैं आपनों जिनगी के बोझ ढोना शुरू करलकै ।

:: ६ ::

जाड़ एकदम्मे उतरी गेलौ छेलै । एक दिन बच्ची पिछुवाड़ी के कुइयां पर सें नहावी कें लौटी रहलों छेलै कि एक कोठरी में ससुर साहब कें आपनों पति सेमल सें बातचीत करतें देखलकै । शायद ससुरें बच्ची कें देखी लेलें छेलै, यही सें हुनी आपनों बातों कें ओकरा सुनाय लेली ही थोड़ों ऊँचों-ऊचों करी कें कहना शुरु करी देलें छेलै । जैसें कि बच्चियो आपनों कोठरी सें सब बात सुनें सकें । जैसें कि बच्चियो आपनों कोठरी सें सब बात सुनें सकें । ससुर कहीं रैहलों छेलै,

—बेटा, आबें यहाँ रहना एकदम्मे ठीक नै । बिजनस एकदम ठप्प पड़ी रैहलों छै । प्लास्टीक कें जमाना आबी गेलै । है कांसा-पीतर के बरतन कोय खरीदै लै नै चाहै छै । सब कचकड़ै के चाहै छै, गिरै तें टूटै नै । हेनों इस्थिति में ई जग्घों छोड़ी कें कहीं दूसरे ठियां व्यापार करवों अच्छा ।

—तें की करलों जाय ?

—तोहें एक काम करैं ।

—की?

—आपनों ससुर के पास जो आरो बचलों गहना लै आव ।

—लेकिन हुनी तें कहलें छै कि ...।

—हम्में जे कहै छियौ करैं । पुतोहू के एक हार पाँच भर सोना के गछलें छै, ऊ लै लियें आरो बीस भर चांदी । कत्तो ना नुकूर करौं तोहें एक नै मानियें जादा कुछ कहौ तें कहियें हम्में लड़की यहाँ लानी कें राखी देवौं तोहें जानियो आरो तोरो बेटी ।

बच्ची सबटा बात सुनी लेलकै । ओकरा समझे मैं नै आबी रहलों छेलै कि वें की करतै ।

ओकरा आपनों बाबू के बारे मैं ख्याल ऐलै । है ठीक बात छै कि ओकरों बाबू कें टाका सम्पत के कमी नै छै, लेकिन अभिये अभी तें देश सेवा सें भी मुक्त होलों छै । बाप रे बाप कत्तें-कत्तें रुपया निकाली-निकाली बाबू देश सेवा वास्तें दै देलकै । हम्में पूछियै तें कहै बेटी, देश आजाद होय जैतै तें धोंन के की कमी रहतै । धने-धन देश मैं होतै । इखनी तें सब धन इंगलिस्तान चल्लों जाय छै । फेनू हमरों तुरते शादी ।

शादी में कि नै करलकै बाबूं आरो फेनू ई, तुरते तगादा ।

बच्ची कें आँखों में एक बारगिये आपनों ससुर आरो आपनों बाबू के तस्वीर ठामे-ठामे घुरी गेलै ।

—ओकरों आँखी के सामना जानकी बाबू के लोरैलों आँख घुमें लागलै । आरो कानों में सम्पत बाबू के तेज-तेज आवाज । सम्पत बाबू कहलें जाय रैहलों छेलै।

—जे गछलें छै, दैलें पड़तै ।

—मतरकि हमरा नैहियो दियें पारें । कैन्हें कि....।

कैन्हें उन्हें हम्में कुछ नै समझै छियै । हुनका गछलों जेवर दैय्ये लें लागतै नै तें बेटी उठाय कें लेलें जाव ।

—बाबू....सेमल आरो कुछ बोलतियै कि सम्पत बाबू बोली उठलै।

—हम्में कुछ नै सुनैलें चाहै छियै । बौकों बनला सें जिन्दगी नै चलतौ । डोंर लागै छौ तें चलें हमरों साथें । जे कहै छियों नी करना होतौं । आरो ठिक्के में ई कहि सम्पत बाबू सेमल के हाथ पकड़तें खाड़ों

भै गेलै आरो ओकरा सें कहलकै ।

—जो तैयार हो जो, ससुराल चलै वास्तें । दुलहिनो कें साथ चलै वास्तें कहैं । इखिनके गाड़ी पकड़ना छै । जरियो सा देरी करै के जरूरत नै ।

आरो ई कही सम्पत बाबू तैयार हुवलें आपनों कोठरी दिश तेज-तेज बढ़ी गेलै ।

:: १० ::

द्वारी पर सम्पत आरो जानकी बाबू मैं गरमा गरमी बात हुवें लागलों छेलै । जानकी बाबू मुँह के पिरकी पिरक दान मैं फेंकतें हुवें कहलकै,

—की तोरा एतनौ हमरा पर विश्वास नै रहलों । जों हेने बात छै तें हमरा महिना भरी के मोहलत दा रत्ती-रत्ती भर बकाय-चुकाय देभौं।

कोठरी के बाहर बच्ची मोखा लागी सब कुछ सुनी रैहलों छेलै। आखरी बात सुनतें-सुनतें ऊ अनचोके सिसकी पड़लै । बेटी के कानबों जानकी बाबू के कानों मैं ऐलै तें हुनी बाहर निकली बच्ची के पीठ स्नेह सें थपथपैतें कहलकै,

—अरे तोहें कैन्हें कानै छौ बेटी । हाथ खाली होय गेलों छै, मतरकि कंगाल थोड़े होय गेलों छी । है बड़ों कोठी, जमीन-जायदाद आखिर कौन दिन काम ऐतै ? दूगो बारियो बेची देबै, हेकरै में तें ऋण कटी जैतै । कानै के की बात छै ।

फेनु जानकी बाबू थोड़ा मुसकैतें हुवें कहलकै,

—फेरु दुल्हा बाबू तें छेवे करै । हुनकौ सें बात करी कें देखै छियै । अरे समधी साहब नें हमरों दुख-दर्द नै समझलकै तें की, पौन्हों

नै समझतै । जमाय तें बेटे नांखी होय छै ।

आरो हेकरों बाद जानकी बाबू सेमलों से भी घंटा भरी बात करलें छेलै मतरकि नतीजा वही निकललै । सेमल नें बार-बार कहलें छेलै कि हम्में बाबू के मनों के विरुद्ध नै जावें सकौं ।

आपनों पति के हेनों बात सुनी कें बच्ची कें मोंन चूर-चूर होय गेलों छेलै । ऊ दौड़ी कें छतों पर चढ़ी गेलै आरो एक कोना मैं बैठली आपनों माय के गोदी में मुँह राखी बच्चे नांखी फफकी-फफकी कानी पड़लों छेलै । कत्तें देर तक माय चुप करतें रहलै आरो कत्तें देर बाद बच्ची चुप भेलै ।

:: ११ ::

कल सेमल आपनों घोंर जैतै । गछलों सोना-चाँदी के जेबर जानकी बाबू जेना-तेना ऊपर करी देलकै । घरों मैं कोइयो महाभारत नै होलै । रात होलै तें माय के बहुत मनैला पर बच्ची ऊ कोठरी मैं ऐलै जहाँ सेमल सूतै के कोशिश करी रैहलों छेलै । बच्ची कें देखलकै तें वैं अनमैठलों भाव सें कहलकै,

—बहुत रात होय चुकलों छै, सूती जा आरो हमरौ सूतें दें ।

आरो सेमलें ई कही दोसरों दिश करवट बदली लेलकै । बच्चियो एत्तें दुखी छेलै कि कुछुवो उत्तर नै दै कें चुपचाप बिछावन कें एक कोरी में सूती रहलै । मतरकि ओकरा नींद नै आबी रैहलों छेलै । नीद ऐबौ करतियै केना ? वैं आपनों पति के स्वभाव के बारे मैं कत्तें-कत्तें सुन्नर भाव सजैलें छेलै । मतरकि सब कपूर बनी उड़ी रैहलों छेलै ।

ओकरा हेने बुझाय रैहलों छेलै जेनाकि ऊ बकरी-छकरी रहें,

जेकरा कसाय के खूंटा में कोय बांधी देलें रहें । आबें ओकरों जिनगी मैं खुशी नै आबें पारें सकें । बस इंतजार करौ चुपचाप मौत के आवै के । बच्ची कें यही लागी रैहलों छेलै कि आबें मेमियैलों सें कोय फायदा नै ।

सोचतें-सोचतें आधों रात गेलै कि तखनिये वैं अनुभव करलकै, एक हाथ ओकरों गल्ला पर धीरे-धीरे रेंगी रैहलों छै । एकबार तें ओकरों मोंन होलै कि जोर सें चीखी पड़ें । पर कुछ सोची कें दम साध लै रहलै ।

आखिरी केकरों हाथ हुवें पारें ? कोठरी तें एकदम्मे बन्द छै । बाहरी आदमी घुसै के कोय सवाले नै छै । जरूर ओकरे पति के हाथ छेकै । बच्ची ई सोची एकदम निश्चिन्त बनलों रैल्है । एकदम इस्थिर। हेने जेनों सेमल कें बुझावें, ऊ एकदम घोर नींदों मैं छै ।

है की ? बच्ची डिबिया के बुझलों-बुझलों रोशनी ने देखलकै कि ओकरों हार खोललों जाय रैहलों छै । वैनें आपनों आँख फाड़ी कें ऊ हाथ पहचानै के कोशिश करलकै । एकदम सेमल के ही हाथ छेलै । बच्ची समझै नै पारी रैहलों छेलै कि ओकरों पति आखिर कैन्हें ओकरों गल्ला सें हार खोली लेलें छेलै । ओकरों मनों में कत्तें-कत्तें नी शंका उठलों छेलै मतरकि पत्नी होय के लोक-लाज के कारने ऊ कुछुवो नै बोलें पारलै । चुपचाप आँख मूनी लेलकै आरो मुनले आँखों सें ई सब कुछ भूली जाय के बिहान तक कोशिश करतें रहलै ।

बिहान होथैं सेमलें बच्ची सें कहलकै,

—हमरों जायके तैयारी करों।

—....

—सुनलौ नै, की कहलियौं ? सेमल के आवाजों में रुखाई छेलै।

—कैन्हें, आजो भरी नै रुकें पारों ? बच्चीं बड़ी नम्रता सें कहलकै ।

—आज भरी की, एक्को पल लेली हमरों रुकना मुश्किल छै ।

—तें हम्मू साथ चलभौं ।

—तोहों वहाँ जाय कें की करभा । अभी यही रूकों बादों मैं जहियों ।

—है हरगिज नै होतै । हम्में साथे जैबौं ।

—जादें जिद करला तें बुरा परिणाम होतौं ।

—जे होतै से होतै; जैभों साथे । शादी के बाद आबें हमरा ई घरों सें की लेना-देना । आबें तें वही घोंर हमरों घोंर छेकै जे तोरों छेकौं । हमरों सास-ससुरों हमरों माय-बाप आरो तोंही हमरों प्राण-देह-सबकुछ ।

—है दरशन-वरशन अपने पास रक्खों आरो हमरों जाय के तैयारी करों ।

बच्ची बहुत हाय-तौबा मचैलकै मतरकि सेमल ओकरा नैहरे मैं छोड़ी वहाँ सें वही दिन, वही समय निकली गेलै । बच्ची दिन भर आँखी मैं लोर लेलें कपसतें रहलै । कै दिन कपसतै रही गेलै ।

:: १२ ::

—बेटी तोरों गल्ला के हार ?

जानकी बाबू बच्ची के सुन्नों गल्ला देखी पूछलकै । मतरकि बच्ची चुप्पे रहलै । शयद जानकी बाबू कें सब्भेटा समझै में देरी नै लागलें छेलै आरो हुनी कहलकै,

—बेटी, हम्में चाहै छियै कि दुल्हा बाबू कोय नौकरी-औकरी करी लौं तें अच्छा । जो तोहें कहों तें हम्में बातचीत करियै । हमरों सम्पर्क के एगो अधिकारी छै । केन्हों नै केन्हों नौकरी में लगैये देतै ।

बाबू के बात सुनथैं बच्ची के चेहरा पर चमक दौड़ी ऐलों छेलै।

—तें ठीक छै, तोहें दुल्हा बाबू कें खबर करी दै । आपनों

मैट्रिक वाला सर्टिफिकेट-उर्टिफिकेट लै आनौ । हमरा मालूम भेलों छै, स्वास्थ्य विभागों मैं बहाली होय वाला छै आरो हमरों साथी वही विभागों के आफिसर भी छेकै ।

ई कही जानकी बाबू ऊपर चल्लों गेलै । बच्ची सेमल कें चिट्ठी लिखलकै । जल्दिये सब कागज लै कें चल्लों आबै लें । आरो ई देखी कें घरों मैं सब्भे कें बड़ी खुशी आरो आचरजो भेलों छेलै कि सेमल तीने रोज के बाद भागलपुर चल्लों ऐलों छेलै ।

बच्ची कें बड़ी खुशी होय रैल्हों छेलै कि सेमल के जिनगी आबें व्यवस्थित होय जैतै आरो ऊ एक कमाऊ पति के पत्नी बनी जैतै । ओकरों मौज-शान सब पूरा होतै । पैसा रुपया कें अभाव में नी ओकरों पति....।

बच्ची कें आपनों ऊपर गुस्सा आबी गेलै कि कैन्हं वें आपनों पति के बारे ऊ सब सोची लै छै जे सेमल कें चरित्र कें छोटों बनाय छै।

पति के तें पत्नी के हर चीजों पर अधिकार होय छै । तन-मन-धन सब पर, आरो पत्नी के कर्त्तव्य होय छै, आपनों पति कें सब कुछ मनों सें समर्पित करें । वैं आपना आप कें समझैलकै आरो सबकुछ भुलाय कें खुश दिखै के कोशिश करै लागलै। बस एक्के बात याद करै कि ऊ नौकरिया पति के पत्नी बनतै ।

बच्ची कें आबें ऊ गीत बड़ी याद आबें लागलों छेलै जै मैं एक पतोहू कें मेला देखै लेली सास-ससुर-देवर-जेठ-नन्दौसी-ननद केकरों-केकरों पास नै जावै लें लागलों छेलै आरो के नै ओकरा पैसा दै मैं दुरदुराय देलें छेलै । जेकरों पति कमाऊ होतै ओकरा कथी के दुख !

मतरकि बच्ची के सब सपना कटलों डारिये रं हरहराय कें गिरी पड़लै। सेमल ठीक समय पर इन्टरव्यू पर जाय के बदला आपनों घोंर चली देलकै । जानकी बाबू के सब करला-धरला पर पानी फिरी गेलै । पढ़लों-लिखलों के कोय खास सर्टिफिकेट नहियो रैल्हा के बादो जानकी बाबू नैं आपनों लाग-लुग सें सेमल के नौकरी पक्की करी देलें छेलै । मतरकि भगवानें बच्ची के भागों मैं कमाऊ पति नै लिखलों छेलै ।

माय-बापू साथें बच्चियो आपनों माथों धुनी लेलकै । कै रोज तक वैंने दुक्खों सें नै खैलें छेलै । तेसरों दिन माय-बाबू के कत्तें मनैला पर वैंने कौर मुँहों में देलें छेलै ।

:: १३ ::

—तें दुल्हा वास्ते की सोची रैहलों छौ ।

बच्ची माय बड़ा दुखलों मनों सें पुछलकै ।

—आबें आरो की सोचलों जाबें सकै छै । बच्ची के कहला पर हम्में छड़ों के गोलो हुनकों लेली दैलें तैयार छेलियै । सोचलियै कि व्यापार में लाख रुपया सालाना कमाय लै छै तें की कम छै । मतरकि दुल्हा कें वहू पसन्द नै होलै । आबें तें हमरा एक्के बात जँचै छै कि बच्ची कें केन्हौं पढ़ाय-लिखाय देलों जाय आरो होकरे भविष्य बनाय वास्तें सोचलों जाय । दूल्हा बाबू के मिजाज कें समझना हमरों लेली मुश्किल छौं ।

जानकी बाबू उदास स्वरों में कहलकै,

—ई बारे में बच्चियों के मोंन जानी लेलों जाय ।

—कैन्हें नी, अभी बेटी कें बुलाय छियै

आरो जानकी बाबू हांक लगैलकै । हांक सुनथैं बच्ची ध ड़फड़ैलों बाबू के पास दौड़ी चल्ली ऐलै ।

—की कहै छों ?

—बैठों बेटी, तोरा सें एगो बहुत जरूरी बात करना छै । हम्में चाहै छियै तोहें अबकी आई. ए. के परीक्षा में बैठी जा । बैठलों-बैठलों हेनौ कें तोरा मोंन नै लागतें होतौं । फेनू पढ़ना-लिखना जिनगी लेली कत्तें जरूरी छै, है तोरा सें बताय के जरूरत नै छै ।

परीक्षा आरो पढ़ै के बात सुनथैं बच्ची कें लागलै जेना ऊ खुशी सें नाची पड़तै । ओकरों चेहरा पर अनचोके घन्नों खुशी के प्रकाश पसरी गेलै । खुशी मैं ओकरों मुँहों सें बस एतनै शब्द निकललै;

—बाबू !

आरो वही खुशी मैं ऊ फुर्र सें फेनू छत्तों पर भागी गेलै । बच्ची कें लागी रैल्हों छेलै जेना ओकरा गोड़ों मैं हजार पायल बंधी गेलों रहें जेकरा सें एक्के साथ संगीत फुटी पड़लों रहें । ओकरों मोंन होय रैल्हों छेलै, रात-रात भर बैठी कें गीत गावें, रात भर नाचतें रहें ।

रात भर बैठी कें ऊ कत्तें कत्तें बात सोचतें रहि गेलों छेलै ।

—ओकरों पति ई बातों से बड़ी खुश भेतै । हुनियो तें साहित्य के बड़ी प्रेमी छै । निराला, नेपाली, नीरज आरो नै जानौ के एक कवि के कविता जोगाय-जोगाय कें राखलें होलों छै । खाली समय मैं उठाय कें पढ़ै छै । गुनगुनाय छै । जबें हुनका ई मालूम होतै कि हमरों पढ़ै के सिलसिला शुरु होय गेलों छै तें कत्तें खुश होतै । जरूर हमरा साथें-साथें पढ़ना शुरु करी देतै । आरो फेनू हुनकों साथें हम्मू अध्ययनरत रहि ढेर-ढेर जानी लेबै । एम. ए. तांय पढ़ी लेबै ।

आरो वही रातों सें बच्ची पढ़ै में डूबी गेलों छेलै, दिन-दिन, रात-रात । जानकी बाबू के खुशी के तें कोय ठिकानों नै रहि गेलों छेलै।

:: १४ ::

सम्पत बाबू के किस्मते में शायद आबें व्यापार नै लिखलों छेलै। सेमल के ससुराल सें लानलों सम्पत्तियो सें दुकान दौरी मैं कोय सुधार नै हुवें पारलै । आरो सेमल के तें स्वभावे अलग होलों जाय रैहलों छेलै । नै दुकान देखना, नै घोंर-गृहस्थी । चुपचाप साथी-संगी के

साथें बैठी तास के पत्ता फेकवों, यही आकरों दिनचर्या बनी गेलों छेलै। कभी आपनों दुआरी पर तें कभी दूसरा के घरों पर ।

एक दिन सम्पत बाबू के पुरानों दोस्त जागेसर नें हुनका सें आबी कें कहलकै ।

—सम्पत, तोंय आपनों बेटा सेमल कें कहीं दूर भेजी दैं, बाहर रहला पर बुद्धियो खुलतै । यहाँ रैहला सें तें सेमल के चरित्रो गड़बड़ाय रहलों छै ।''

—से की ?

सम्पत बाबू के चेहरा पर अनचोके चिन्ता आरो आश्चर्य के भाव उभरी ऐलों छेलै ।

—आबें की कहियों सम्पत, अनसिया के बेटी के साथें सेमल के जोन रं के बात-व्यवहार चली रहलों छै, हेकरा सें तें तोरों कहीं सें इज्जत नै रहैवाला छौं । अनसियो बेटी के चाल-सोभाव तें विख्याते छै। समय रहते सेमल कें संभाली ले सम्पत, नै तें कन्हौं मूँ दिखाय लायक नै रही जैबे । हमरों मानें तें सेमल के कनियांय कें ओकरों नैहर सें बुलाय कें यहीं रखी ले । बिहैलों बच्चा-बच्ची कें अलग-अलग जादा दिन रखना सें चाल-चलन बिगड़वे करें । फेनू कनियांय यहाँ रहतै तें सेमलो के चरित्र पर अंकुश लगैतै ।

सम्पत बाबू के मुँहों सें एक्को आखर नै निकललै । यहाँ तक कि जागेसर उठी कें चल्लों गेलै तभियो नै । है की होय रहलों छै ? हुनी मनेमन सोची कें व्याकुल होलों जाय रहलों छेलै—''नै, नै हम्में कनियांय के नैहरा छोड़ी अच्छा नै, करी रहलों छियै । आरो हुनी आपनों मंझलका बेटा कें आवै के हाँक लगैतें चिट्ठों लिखैलें बैठी रहलों ।

:: १५ ::

कत्तें कोहराम मचलों छेलै जखनी बच्ची कें लै जाय वास्तें ओकरों दियोर दुआर पहुँचलों छेलै । बच्ची माय तें साफ इनकार करी देलें छेलै, ''नै-नै बच्ची बेटी आबें यहाँ सें नै जैतै । जब तांय ओकरों जिनगी नै बनी जाय छै । इखनी लै जाय के मतलब छै कि ओकरों साल भरी के पढ़वों-लिखवों सब खतम । समधी जी बुरा मानौ या भला । मतरकि बच्चिये जाय वास्तें आखिर मैं तैयार होय गेलों छेलै । वैं माय कें बड़ी मुश्किल सें समझाय-बुझाय कें हेकरों वास्तें तैयार करलें छेलै—''माय, बेटी जिनगी भर वास्तें आपनों माय-बाबू के घरों पर रहै पारलों छै ? बेटी के किस्मते परदेश वास्तें बनलों छै । फेनू कहिया तक हम्में आपनों ससुराल सें आपनों पिंड छुड़ाबें पारौं । किस्मत के बनवों बिगड़वों आबें हुनिये सोचतै, हुनकै सोचै के अधिकार छै । कहीं है विरोध करला सें हमरों भविष्य आरो नै खराब होय जाय । यही लें हमरा जावें दें । हमरा रोकै के मतलब छै, हमरों दुर्भाग्य कें बुलैवों ।'' आरो बच्ची के ई सब बात सुनी कें ओकरों माय ओकरों बिदाय वास्तें तैयार होय गेलों छेलै ।

मतरकि बच्ची के ससुराल ऐला सें कोय स्थिति बदली गेलों रहै हेनों बात नै होलों छेलै ।

ससुराल के आर्थिक स्थिति जे गिरी गेलों छेलै, ऊ दिन-दिन आरो गिरते चल्लों गेलै । हेने लागी रेल्हों छेलै जेना घरों पर एक्को फूस नै रहि जैतै । खाना-पानी हेनों भै गेलै कि बच्ची के मुँहों मैं नै राखलों जाय । कै-कै दिन तें ऊ पानियो पीवी कें रहि जाय । जोन दिन हेनों हुवै ऊ दिन बच्ची कें कोय खेइयों लें नै पूछै । शायद घरों मैं पूछै लायक अन्नों नै रहै । दिन बीततें चल्लों गेलै । महिना, वर्ष । वर्ष पर वर्ष । तीन वर्ष बीती गेलै ।

एक दिन सेमल बड़ी उदास होय कें बच्ची के पास ऐलै । बच्ची के जिनगी मैं शायद ई पैहलों दिन होतै जबें ऊ सेमल सें पति के

आत्मीयता पैलें होतै । बच्ची धीरें सें ओकरों नगीच बैठतें हुवें पूछलें छेलै ।

—आय तोरा बहुत उदास देखै छियौं । की बात छेकै ?

—आबें तोरा से की बतैइयौं । चाहै छेलियै, आपनों घरों के कुछुवे बात तोरा सें नै कहियौ, मतरकि छुपैलों सें आवें कुछुवे नै छुपैवाला छै । नै जानौं भगवान एत्तें कुपित कैन्हें भै गेलों छै । एक्को कदम नै संभलें दै छै । महिना भरी होय गेलै, एगो चाय के दुकान खोल्लों छेलियै, वहू बैठी गेलै । आबें तें जेना लागै छै...।

कहतें-कहतें सेमल के बोली एकदम रुआंसा होय गेलों छेलै ।

—तें हेकरा मैं घबड़ावै के की बात छै, हम्में आपनों बाबू सें बात करै छियै । हुनी जरूरे कुछु न कुछ व्यवस्था करतै । हम्में आपनों बाबू कें जानै छियै ।

आपनों देश से आपनों बेटी के कम नै मानलें छै ।

—मतरकि तोहें हेनों स्थिति मैं जैभौ केना ? लोगें कि कहतै । दूजीवियों हालतों में वहाँ नै राखी कें नैहर पहुँचाय देलकै । घरों में राखै-पोसै के स्थिति नै होतै तभियो तें ।

एकदम हेनों बात नै सोचों । माय-बाबू हमरा देखी एत्तें खुश होतै कि कैहलों नै जाबै सकें छै । हम्में आपनों कोखी में पली रहलों बच्चा पर हाथ रखी कें कहै छियौं, हम्में यहाँकरों एक्कों हालत वहाँ नै कहवौं ।.....लोग कहै छै जनानी के पेटों में बात नै पचै छै, तोहें यही डरों सें डरी नै जइयौ ।

ई कही बच्ची बहुत हल्का मुस्कैलों छेलै ।

—सुनों, हमरों तरफ सें तें कोय मनाही नै छै, जरा बाबू जी सें पूछै लें लागें हुनी शायद हेकरा पसन्द नै करै । तोहें तें जानभे करै छों कि हमरों-तोरों बाबू में खींचातानी भै गेलों छै । जों बाबू-माय नै चैहतौं तें हमरों चाहतौं हम्में तोहरा नैहर नै भेजें सकौं। हम्में माय-बाबू के विरुद्ध नै जाबें सकौं ।

—तें माय-बाबू कें केन्हों मनावों नी ।

—हम्में कोशिश नी करें पारौं, मोंन तें बाबुवे माय के रहतै ।

आरो ई कही सेमल उठी कें बरान्डा दिस चली देलें छेलै, बाबू सें बातचीत करै लें ।

बारह बजे रात तांय बच्ची आपनों कोठरी मैं बैठलों-बैठलों दुआरी दिस आँख गड़ैलें रैहलें कि आबें सेमल ऐतै, आबें सेमल ऐतै । मतरकि ऐलै तबें जबें बिहान होय चुकलों छेलै । बच्चियो कहाँ सुतलों छेलै । देखथैं उठी-बैठी गेलै ।

—की कहलकौं ?

बच्ची के स्वर में काफी उदासी छेलै । सेमलें एकबार बच्ची कें एक अजीबे नजरी सें देखलकै आरो फेनू चुपचाप कोठरी सें बाहर निकली गेलै बिना कुछ कहले ।

बच्ची कें सब्भेटा बात समझै में कुछुवो देर नै लागलै । वैनें आपनों बितलों अनुभव के आधार पर सबटा आदि मैं अन्त तक जानी लेलकै आरो फेनू चुपचाप खाड़ी भै गेलै, घरों के सबटा काम निपटाय लें। फरचों होला के बादे बच्ची कें बिछावन पर नै देखै लें चाहै छै । जरियो देर होतियै कि नानी माय लगाय कें की-की नी कही बैठतियै से बच्ची तुरत्ते उठी खाड़ी होय गेलै आरो ओसरा पर आबी गेलै । बाहर कोय नै छेलै । सब्भे आपनों बिछावन पर होतै, नींदो मैं विभोर या आलस मैं डूबलों । बच्ची आपनों कोखी दिस एक बार देखलकै । नौ महिना सें ऊपर होय ऐलों छेलै यहू हालतों पर घरों के काम बच्ची के ठोरों पर एक घृणापूर्ण हंसी फूटी गेलै ।

:: १६ ::

—माय, तोरा सिनी कें होय की गेलों छौ । लाज बीज एकदम

धोय-धाय कें पीवी गेलों छैं की ?

कमलें माय पर बरसतें हुवें कहलकै । कमल सेमल के मंझलका भाय छेकै । आपनों पत्नी साथें आपनों ससुराले मैं रहै छै । आय चार वर्षो पर घोंर ऐलों छेलै ।

बच्ची के शादी पहलें कमलें सें लागी रैल्हों छेलै । पंडितें बतैलें छेलै, कन्या के राशि योग सेमल सें नै कमल से बैठै छै । मतरकि बड़का भाय कुमारों रहतियै आरो छोटका के बीहा, है केना कें हुवें पारै छेलै । से बच्ची के शादी सेमल सें होय गेलै ।

बच्चियो कें मालूम छै कि कमल आपनों गुणों आरो स्वभावों मैं कोय्यो भाय सें बहुत उच्चों छै । घरों के लोगों सें पटरी नै बैठला के कारण घोंर छोड़ी ससुराल बसी गेलै आरो घोंर आनूहै छोड़ी देलकै । कमल के देखा-देखि निर्मलो । घरों में खाली सेमले रहि गेलों छेलै, माय-बाबू के श्रवण बनी कें ।

आय चार वर्षो के बाद कमल घोंर लौटलों छै । घरों के जे स्थिति छेलै छेवे करलै, मतरकि भौजाय के देहों पर फटलों लुंगा देखी के ओकरों छाती-फाटी ऐलै ।

बच्ची हेनों साड़ी में कमल के सामना आवैलें नै चाहै छेलै । वैनें कमल कें बातो करै लें नै बुलैलें छेलै । कमल आपने ओकरों कोठरी में घुसी ऐलों छेलै आरो ओकरा आपनों भांगलों साड़ी सें देहों कें छिपैतें देखी कें तड़पी उठलों छेलै ।

मतरकि हेनों भाव रचलें छेलै जेना कि ओकरों नजर भांगलों लुंगा पर पड़लें नै रहें ।

—की भाभी, हमरा पर तोहें गुस्सैलों छौ की ? हमरों ऐलों तीन घंटा होय गेलै, आरो हमरा तोहें बुलैलों तक नै ।

—ई जानै लें कि अभियो हमरों देवर हमरों रहि गेलों छै कि नै ?''

—भाभी, तोहें नैहर कैन्हें नी चल्लों जाय छों, यहाँ दम घुटैला सें की फायदा ।

—दम कथी लें घुटतै दियोर ?

बच्चीं आपनों ठोरों पर हल्का हंसी लानतें कहलें छेलै ।

—बनावटी हंसी नै आनौ भाभी हम्में तीन-चार घंटा मैं सब कुछ जानी लेलें छियै । तोहें ई घरों के बारे मैं की जानभौ । हम्में जानै छियै। यहाँ खाली रूपया-पैसा कें पहचानलों जाय छै, आदमी के कीमत यहाँ कुछुवो नै छै । हम्में कहै छियै, तोहें ई हालतों मैं यहाँ नहिये रहौ तें ठीक।

—मतरकि माय-बाबू घोंर जाय सें मना करलें छै ।

—माय-बाबू मना करैवाला के होय छै । चलों हम्में तोरा नैहरा पहुँचाय दै छियौ । ठहरों, भैया सें बात करै छियै ।

आरो कमल कोठरी सें गुस्सा मैं बाहर निकली ऐलों छेलै । कमल के आत्मीयता पावी कें बच्ची कुछ क्षणों वास्ते एकदम निहाल होय उठली छेलै । वैं मनेमन आपनों भाग कें कोसलों आरो कमल के स्वभावों कें सरैल्हें छेलै, कत्तें अच्छा होतियै जों कमल सें हमरों बीहा होलों होतियै । कत्तें दावा आरो प्रेमों सें बात करै छेलै जेना ऊ हमरों पति रहें । है रं के बात सोचथैं बच्ची एक अनचिन्हों सुखों सें भरी गेलों छेलै । बस एक्के गूंज ओकरों मनों सें लैकें दिमागों तक गुंजतें रहलै। कत्तें अच्छा होतियै कि कमले ओकरा जिनगी मैं ऐतियै । शील स्वभाव के कत्तें धनी छै कमल ।

आरो ऐंगन में कमल के आवाज गुंजी रहलों छेलै ।

—लागै छै, भाभी घरों के बहू रहें ? नौड़ी बनाय कें राखी देलें छै ।

—बड़ी हमदर्दी होय रहलों छै । एतनै दया छौ तें साड़ी कैन्हेंनी कीनी कें दे दै छैं ।

ई कही गुस्सा मैं कमल माय उठी खाड़ी भै गेलै आरो झनझनैतें एक ओर चली देलकै ।

—अजीब है घोंर होय गेलों छै । आचरज होय छै कि हेनों माहौल मैं भाभी बची केना रहलों छै । पत्थर कलेजावाला घुटी कें मरी

जाय ।

एतना कही कमल फेनू बच्ची के कोठरी में चल्लों ऐलै आरो थोड़ा नरमैतें हुवें कहै लागलै—भाभी, उठों । यहाँ एक्को पल लेली ठहरना बेकार । तोरों तैयार होतें-होंतें भैयों आबी जैतै । नैहियों ऐतै तें कुछ नै होय छै । हम्में बादों में हुनका मनाय लेबै ।

—अरे, तोहें व्याकुल कैन्हें होय रहलों छै । स्थिर हुवें तें ।... हमरा यहा पर की दुख छै जे हम्में माय-बाबू के किंछा के खिलाफ यहाँ से मनमुटाव करी चली देवै । नै नै दियोर, हेनों नै करवाबों । हमरों साथें तहूँ बदनाम होवा । लोगें यही कहतौ कि भाभी दियोर उड़ारी लै भागलै ।

बच्ची हँसतें हुए कहलकै आरो कमल कें दुलार सें खटिया पर बिठैतें मुस्काय-मुस्काय कें कहना शुरु करलकै,

—एक बात कहियौं दियोर, हमरा जों कुछ दुख आविये गेलों छै तें हेकरा मैं गोस्सावै के कोय बात नै । है कैन्हें नी समझै छौ कि हमरा पर ई दुख परिवार पर पड़लों दुख के कारने नी छै । आय जों घरों के आर्थिक स्थिति ठीक होतियै तें की समझै छों, हमरों देहों पर भांगलों लुंगा होतियै । आय हम्में ई दुक्खों सें घबड़ाय कें जों नैहर चली दै छियै तें लोगें हिनस्ताय करें नै करें । हमरों मोंन तें हमरा धिक्कारतें रहतै। ...हम्में समझै छियै कि हमरों दियोर हमरा बड़ी मानै छै । एत्तें मानै छै कि जेना...। मतरकि विपत्ति मैं सबर धरलैं से आदमी कहाय छै । हम्मे तें चाहवै कि हमरों दियोर देवता रं हुवें । आखरी कुछु शब्द कें कहतें-कहतें बच्ची के जी जेना लड़खड़ाय गेलों छेलै । ओकरा लागलै कि जेना ऊ कुछु दूसरे बात कहै लें चाहै छेलै आरो दूसरों बात कही गेलै। मतरकि आपनों स्थिति पर काबू पैतें तुरन्ते बच्ची कहलकै,

—की दियोर, तोहें के देवता नै बनै लें चाहै छों ?

कमल भाभी के बातों के कुछुवो उत्तर नै दियै पारलकै । टुकुर-टुकुर भाभी के आँख मैं झांकतें रहलै । कत्तें प्रेम छै वै आँखी में कत्तें करुणा । कमल कें लागलै जेना ऊ वै प्रेमों के धार मैं बही जैतै।

—अरे तोहें चुप छों, कुछ बोलै नै छौ ।

—आबें हम्में की जवाब दियौं भाभी । तोहें सचमुचे मैं बहू के रूपों में देवी घोंर ऐली छौ । फेनू देवी कें ई दुख । की लेली यहू माय कही कें टाली देलों जाय ।''

—तोहें बहुत भावुक बनी गेलों छों । हम्में है कहाँ कही रहलों छियौ कि हम्में तोरों साथ नहिये जैबौ । एकदम जैवों । पहलें आपनों कनियांय कें यहाँ लानों । अकेल्ले अकेल्ले ऐलों छों हमरा उड़ारे लें । मरद केन्हों ।

बच्ची के बात सुनी कमल मुस्की पड़लों छेलै । नै चाहतें हुवें ओकरों ठोरों पर एक मुस्कान खिंची ऐलों छेलै । आरो फेनू अनचोके गंभीर होतें हुवें कहलें छेलै,

—ठीक छै भाभी, जाय छियौं आरो जल्दिये रेखा साथें आवै छियौं । तोरा ई नरकों सें हमरा जेना होतै, निकालनै छै ।

आरो ई कही कमल कोठरी सें निकली, ऐंगन होतें घरों सें सीधे बाहर होय गेलों छेलै । बच्ची हाथों से रोकतै रहि गेलै लाजों सें हांक नै दियै पारलकै ।

:: १७ ::

बच्ची कें लड़की होलै । आय लड़की के छट्ठी छेकै । पर घोंर हवांक लागी रहलों छै । सोरी घरों सें निकलला के बाद सास एक्को बार बच्ची कें देखै वास्तें नै ऐलै या ओकरों दुख जानै वास्तें । बुतरु कें छाती सें सटैलें बच्ची यही सपना देखतें रहै छै, जानकी बाबू के कोठी में आय अनदिने होली आरो दीवाली एक्के साथ मनैलों जाय रहलों छै । घरों के खिड़की-खिड़की सें आवाज छनी-छनी कें बाहर तांय आवी

रहलों छै,

आजु सुमंगल दायक, सब विधि लायक हे
ललना रे जनमल होरिला, आनन्द मन छायल हे
दुअरे बाजै बधावा ऐंगना आवै सोहर हे
ललना रे राजा दशरथ के मन भेलै हुलास
नौबत झरै हे ।

जानकी बाबू आरो हुनकों पत्नी के खुशी के कोय ठिकानों नै रहलों छै । घोंर के बाहर मंगनिया के भीड़ लागी गेलों छै आरो बाबू कपड़ा अन्न दै में कोय कमी नै करि रहलों छै,

होरिला के सुनी कें जनम, उदाह भेलै हे
ललना रे मांगै इनाम, से लिए घर जैबे हे
वसन आभूषण सब पावन मन हुलसाल हे
ललना रे होरिला कें दै आशीष हरीष गुण
गावन हे

...सपना देखी-देखी बच्ची के मन होय छै जेना ऊ लड़की कें अंचरा में समेटी सीधे नैहर भागी जाय । ओकरा ई सोची बड़ी दुख होय छै कि घरों में पैहलें टा सन्तान होलों छै आरो कोय्यो खुशी नै । लागै छै जेना सन्तान नै होलों रहै, घरों मैं कोय लाश निकली गेलों रहें । बच्ची कें आँख में लोर भरी ऐलै । मतरकि ऊ ठोर बांधी चुप्पे रहलै । टुकुर-टुकुर बेटी के मुँह देखते रहलै जेना मांय सें कहतें रहें, ''माय तोहें ऊ हमरों वास्तें दुखित कैन्हें छैं । हमरा यही स्थिति सुख दै छै । जबें तोंही एत्तें दुक्खों सें जिनगी काटी रहलों छै तें हमरों छट्ठी पर एकदिन खुशिये मनैला सें की ?'' बच्ची आपनों बेटी के छाती सें सटाय लेलकै आरो एक पल चुप रहला के बाद टुटलों-टुटलों स्वर मैं गावै लागलै,

मचिया बैठलि मातु कौशिला बालक मुख निरखत हे
ललना रे मोरा बेटा प्राण के आधार नैन बीच राखव हे ।

:: १८ ::

बच्ची के बेटी जों-जों बढ़लो गेलै, बच्ची वास्तें घर स्वर्ग बनतें चललों गेलै । नाना नाम राखलें छेलै—रजनीगंधा । ठीक नामे हेनों रजनीगंधा के रूप आरो गुण । गोरी-लारी हेने जेन्हों जगदम्बा बच्ची के रूप लै जन्मलों रहें । दिनभर फुदकतें गैतें रहें ।

बच्ची के माय-बाबू आरो नानी समधियारों ऐलों छै बच्ची आरो ओकरों बेटी कें देखै लें । खाना-पीना आरो सोना, सब एक होटल मैं करी लेलें छेलै । रजनीगंधा कें कत्तें-कत्तें सोना-चांदी कपड़ा देलें छेलै नाना-नानी आरो परनानी । आरो फेनू दस रोज बाद भागलपुर लौटी ऐलों छेलै ।

बच्ची नै जानलकै कि ओकरों माय-बाबू आरो नानी ओकरा-ओकरों बेटी के की देलकै । जानै के कोशिश नै करलकै । दस रोज तांय माय-बाबू नानी यहाँ आबी कें रहलों यही तें ओकरों वास्तें अगाध हर्ष के बात छेलै । जेना ओकरा इन्द्रासन के सम्पत्ति मिली गेलों रहें ।

तीन वर्ष तक बच्ची यही खुशी मैं डुबलों रहलै आरो देखथैं-देखथैं रजनी गंधा तीन वर्षो के होय गेलै ।

रजनीगंधा बच्ची के पीछू-पीछू लागलें रहें । कभियो कुछ लें जिद नै करै, बस एक्के चीज छोड़ी कें कि तुलसीदल हमरा सबसें पहलें दे । बच्ची रजनीगंधा के ई स्वभाव पर आश्चर्यचकित छेलै । बच्चें से ई धार्मिक हाव-भाव । रजनीगंधा के ई स्वभाव देखी-देखि बच्चियो भगवान के भक्ति-भाव मैं डूबतें चल्ली गेलै । बीती गेलै छों महिना आरो ।

एक दिन अनचोके रजनीगंधा के मिजाज बिगड़ी गेलै । तबीयत खराब भेलै तें भेलै चल्लों गेलै । मतरकि रजनी के मूँ पर परेशानी के कोय भाव नै उभरै । बच्ची देखी रहलों छेलै कि ऊ आबें बोलै-चालै कम छेलै । बोलै-चालै तें पैहलों रजनी कम छेलै, आबें आरो कम होतें गेलों

छेलै । बस बोलै तें तुलसीदल चाहै लें ।

बच्ची कें समझै में आबै लागलै कि हमरों बेटी नै बचती । दिन-रात ऊ ओकरे पास बैठलों रहै । कुछ सें कुछ बतियैते रहै आरो रजनी माय के मूँ टुकुर-टुकुर ताकतै रहै, नै तें आँख प्रायः मुनलें राखै। कभी-कभी माय सें बतियावै तें बस रुकी-रुकी यही बोलै ।

चलों चलों माँ सपनो के गाँव में
काँटों से दूर कहीं फूलों की छांव में ।

रजनी जहिया सें बोलना सिखलें छै, यही गैतें रहै छै ।

बच्ची कै बार रजनी के बदतर हालत के बारे में सास-ससुर कें खुली कें बताय चुकलों छै । मतरकि कोय ध्यान नै देलकै सास-ससुरें। कै बार पतियो कें गोड़ पकड़ी कानी-कानी कहलें छेलै, कोय अच्छा डॉक्टरों सें रजनी के इलाज कराय लें । मतरकि सेमलों यही कही टारी देलें छेलै 'रजनी कें होलै की छै । रुत बदलला पर मोंन-तोंन खराब होइये जाय छै । कुच्छू दिनों में तबियत ठीक होय जैतै । यही लें डॉक्टरो के पास रुपया फेंकी ऐवों कोन बुद्धिमानी होतै । तोहें औरत जात, हेने घबड़ाय जाय छों । ....आरो एक बात कही दै छियौं, हमरा है इलाज-फिलाज वास्तें रोज-रोज हुरकुचलों नै करों, नै तें एक दिन गुस्सा में धुनाटी देवौ ।''

बच्ची चुप होय गेलों छेलै । एकदम चुप, जेना रजनी होलों जाय, रहलों छेलै । आपनों जीवन कें रजनी के रंग-ढंग में मिलैलें चल्लों गेलै मूँ में मिसरी आरो तुलसी के दस-पन्दरह दल लै कें रजनी के नगीच बैठी रहें । रजनीगंधा के एक दिन आँख पथराय गेलै । ओकरों मूँ जरा सा खुललै, बच्ची दौड़ी कें गंगा नीर लै आनलकै, मूँ में चम्मच सें नीर डाललकै । रजनी के मूँ में अभियो भोरके लेलों तुलसीदल हरा बनलों सटलों छेलै । बच्ची के हाथों आरो आँखी के नीर एक साथ भोवाय पड़लै । मतरकि ऊ कानलै नै तैहियो नै, जबें कि रजनीगंधा के शांत शरीर सफेद कपड़ा में लिपटाय कें घरों सें बाहर निकाललों जाय रहलों छेलै ।

:: १६ ::

दू साल बाद ।

जानकी प्रसाद करीब पन्द्रह लोगों के साथ बच्ची के ससुराल पहुँचलै। हुनी कोय रं सें ई वास्तें तैयार नै छै कि बच्ची नैहर नै जैतै । 'तोरा सिनी आखिर की चाहै छौ, जेना रजनीं के जान गेलै होनै कें फेनू. .. । बच्ची जोन स्थिति सें गुजरी रहलों छै, हेना मैं अबकी हम्में यहाँ कोय हालतों मैं नै रहें देभौं समधी साहब, है जानी लें ।' जानकी बाबू नें नाराज होतै कहलकै ।

सम्पत बाबू तें बातों पर थोड़ों नरमे दिखाय पड़ै छेलै मतरकि हुनकों पत्निये नै जावें दै वास्तें अड़लों होलों छेलै । हेकरा पर जानकी प्रसाद आरो नाराज स्वर मैं कहलकै,

—तें तोरासिनी के यही मोंन छौं कि बच्चा साथें बच्चियो के जान चल्लों जाय तें अच्छा । है नै समझों कि हमरा कुछुवे बात मालूम नै छै; हमरा सभ्भे कुछ मालूम छै । टोला-पड़ोस के लोग बोलै छौं कि तोरासिनी रजनीगंधा के एक्को पैसा इलाज नै करलौ आरो बेचारी एक बूंद दवा के अभावों मैं तड़पी कें मरी गेलै । आबें आपनों गलती छिपाय लें तोरासिनी जत्तें गाल फुलाय फुलाय बोलों । ....वहू की हम्में बेटी कें उमिर भरी वास्तें लै जाय रहलों छियै । छुट्टी उट्टी होय जैतै तें लै आनियों । बच्ची कें ई घोंर छेकै तें वहू घरे छेकै । वनवास थोड़े जाय रहलों छै ।

जानकी बाबू आरो कुछ कहतियै कि बीचे मैं रोकतें हुवें सम्पत बाबू कहलकै,

—ठिक्के छै समधी जी, ई संबंध मैं बहूओ के राय जानी लेलों जाय । जों हुनी जाय लें चाहै तें हमरा कोय आपत्ति नै ।

—है एकदम ठीक ।

बच्ची सें पूछलों गेलै तें मोरवा लुग खाड़ी किबाड़ के पीछू सें वैं 'हौं कहलकै ।

बच्ची के सब सामान बंधना शुरु होय गेलै । सामान की ? बस एक बड़ों रं बक्सा आरो सामान के नाम पर दू-चार गुदड़ी बनलों साड़ी। एकबार तें मन होलै, ई सब साड़ी जे ओकरों दुर्भाग्य रं छेलै, ससुराले में छोड़ी दै । की कहतै भला ओकरों नैहरवाला ई साड़ी देखी कें । मतरकि कुछ सोचतें हुवें वैं साड़ी बक्सा में सड़ियाय लेलकै । शायद यही लें कि साड़ी छोड़ी देला सें यहाँ केकरो मनों में तकलीफो हुवें पारें।

जखनी बैलगाड़ी पर बैठी बच्ची ससुराल सें जाबें लागलों छेलै तें पीछू पीछू सेमलों ऐलों छेलै । मतरकि नैं तें चेहरा पर कोय दुख, नै तें कोय खुशी । बच्ची सोचलें छेलै, घर सें हमरों निकलथैं सेमल उदास दिखतै मतरकि हेनों नै होलों छेलै । बच्ची टप्पर सें बाहर मूँ करी कें देखलकै । सेमल एकदम्मे बीतराग बनलों गाड़ी के पीछू-पीछू चल्लों आवी रैल्हों छेलै । बाहर झाँकें के क्रम में ओकरों नजर बच्ची पर पड़लों छेलै पर होनै कें जेना मेला में कोय बड़का के नजर बेलुन पर पड़लों रहें । 'तोहें कहिया आबी रहलों छों ?' बच्ची सेमल सें पूछलें छेलै मतरकि ओकरा हुन्नें सें कोय उत्तर नै मिललों छेलै । सेमल के ई चुप्पी सें बच्चीं एतनै जानलकै, या तें हुनी हमरों नैहर जैबों अच्छा नै समझी रहलों छै या फेनू हुनी खुद ससुराल जैबों । बच्ची चुप भै गेलै कैन्हें कि ओकरा मालूम छै, दोबारा टोकला पर सेमल समय-कुसमय जानलें-बुझलें बिनै गरमाय उठतै । से ऊ आपनों माथों टप्पर सें टिकाय भीतर बैठलें रहलै, आकाश दिश मूड़ीं उठैलें ।

बैलगाड़ी आपनों रास्ता पर रसें-रसें चलते रहलै । मतरकि बच्ची के दिमाग ओकरा सें हजार गुणा तेज विन्डोबें नाँखी ।

:: २० ::

के नै पहुँचलों छेलै बच्ची कें दिखैलें, नैहर पर बच्ची के पाँव रखथैं । आरो केकरों-केकरों धौनों पर माथें रखी ऊ नै कानलों छेलै ।

बच्ची माय के तें जेना लागै कि कानतें-कानतें प्राणे छुटी जैतै। ई स्थिति देखी जानकी प्रसादें भरैलों कंठों सें कहलकै । कानै-धानै के कोय बात नै छै, आबें हम्में समझी लेबै कि हमरों बेटी कुमारिय छै । जे समझी कें हम्में बच्ची कें ऊ घरों में बिहैलें छेलै, सब बेरथ समझै छियै । आरो ई कहा हुनी बच्ची कें साथ लेनें ऊपर दलानों पर चढ़ी ऐलों छेलै । पीठ-माथों सहलाय-सहलाय के ढेर-ढेर समझैतें रहलें छेलै।

मतरकि तेसरे दिन माय सें ई सुनी ऊ एकदम चुप होय गेलै कि जोन दिन रजनीगंधा मरलों छेलै, ओकरों दोसरे रात वैं हमरा सपना में कहलकै 'नानी तोहें हमरा कत्तें मानै छेलै आरो तोरा वास्तें कत्तें छटपटैतें रहलियै। मतरकि कोय बात नै, हम्में आइये राती लेरुआ बनी कें जनमवौ तोरा देखैलें । आरो वही राति एक लेरुआ होलों छेलै, माथा पर त्रिशुल के चिन्ह । हेनों लेरू कोय नै देखलें छेलै । जनमथैं लार-पुआर होय उठलों छेलै । बच्ची माय आपने सें ओकरा दूध पिलावै कि केन्हों कें ऊ बची जाय पर तीसरे रोज बच्ची माय कें देखतें-देखतें दम तोड़ी देलें छेलै ।

खाली बच्ची के नैहरे मैं नै सौंसे लोंर-जोंर मैं ई विश्वास फैली गेलों छेलै कि जनमलों लेरू रजनीगंधै छेलै जे नानी-गोदी मैं खेली-कूदी खाय-पीवी स्वर्ग सिधारी गेलै । नैहरा भरी मैं सबके बस एक्के विश्वास छै कि रजनी पार्वती के रूप छेलै जे शिव के रूप धरी नानी कें देखै लें ऐलों छेलै ।

बच्चियो मानी लेलें छेलै कि रजनी तें पार्वती छेलै जे कुछ वर्ष ओकरों उदासी दूर करै लें ओकरों साथ होय गेलों छेलै; भला देवी मनुष्यों के साथ केना रहें पारें ? आखिर कैन्हें, जबें हम्में ओकरा कुछ पढ़ै-लिखै लें बतैइयै तें ऊ यही बोलै,

भजन करो भगवान का
देहिया है बिल्कुल मट्टी की ।

ऊ रजनीगंधा नै छेलै, एकदम कोय देवी-देवता के अवतार, तभिये तें होनों बात कहतें रहै । बच्चियो मांय बच्ची कें समझेलें छेलै,

—बेटी, हेना कें चिन्ता करला आरो उदास रैल्हा सें कोखी-बच्चा पर असर पड़ै छै । हमेशा हँसलों-बोललों करों । विधि के जे विधान होय छै ओकरा सें बाहर एक पत्तो नै हिलें पारें ।

आरो माय के बात बच्ची मनों सें मानी लेलें छेलै—विधि के जे विधान होय छै ओकरा सें बाहर एक पत्तो नै हिलें पारें ।

:: २१ ::

—कै महिना बीती गेलै । जानकी बाबू कोय खबर नै भेजलकै। की बात छै ?'' सुभाष बाबू आपनों पत्नी सें हुक्का गुड़गुड़ैतें कहलक।

—हम्में की बतैइयौं कैन्हें नी भेजलकौं । पतोहू तोरों, समधियो तोरों । तोंही जानों सीता जनक के कथा ।

पत्नी के स्वर मैं झुंझलाहट छेलै ।

—तैहियो कुछ तें खबर हुनका भेजनै चाहियों कि नै ?

—खबर तें ऐलौ छेलौं । फेनू घरों मैं देवी अवतार लेलें छौं । घरों के वंश आबें रुकलों समझों ।

की सोचतै । हम्में तें ओकरा कहि चुकलों छियैं कि वंश चलाय वास्तें दूसरों बीहा करी लें । मरद कें तीनो चार कनियांय रहें तें कोय बात नै हों जनानी कें ई शोभा नै दै छै ।''

—हेनों नै बोलों ।

कैन्हें नी बोलबै । की हम्में तोरों दोभियों नै छेकियौं । तोहें

हमरा पकड़ी कें लानला की नैं ?

—सुनों, ई सब एकदम नै बोलों । हम्में आबें सेमल लें कुछुवौ की करें पारौं ? ससुराले के भरोसों समझों । हम्में तें सेमल सें यही कहै वाला छियै कि कैन्हें कें ससुर कें मनाय-जुनाय भागलपुरे मैं बसी जाव। हम्में जानै छियै हुनकों वास्तें जमीन-मकान बनवाय देना बांया हाथों के खेल छेकै ।

ई कही सम्पत बाबू थोड़ों देर लेली चुप्पे रहलै । फेनू बात कें आगू बढ़ैतें हुवें कहलकै 'तोहें उठी कें जा आरो सेमल कें भेजी दौ । हम्में जे सोची रहलों छियै, काम वहें हुवें लें दौ । नै तें तहूँ दुख उठैवा। अभी तें तोरों ढेर जिनगी बाकी छौ आरो हमरों की, पकलों आम । कखनी टपकी पड़ौं । कल बेटा के जिनगी बनी जैतौं तें समधियारौ मैं गोड़ राखै लायक ठांव बनी जैतौं । जा सेमल कें भेजी दौ ।'

सम्पत बाबू के बात सुनी हुनकों पत्नी वहाँ से बिना कुछ कहले चली देलकै, ई सोची कें कि सम्पत बाबू ठिक्के कही रहलों छेलै ।

पाँचो मिनट नै बितलै कि सेमल आबी कें बाबू के नगीच बैठी गेलै । तबें सम्पत बाबू आपनों दोनो हाथ रगड़तें हुवें कहना शुरु करलकै,

—देखों बेटा, आबें हमरों कोय भरोसों नै, कखनी टपकी पड़ौं। आपनों दोनों भाय के तमाशा देखिये रहलों छौ । घर-द्वार छोड़ी-छाड़ी ससुराले बसी गेलौं । आबें माय के भार-तोरै पर, आरो केकरा ऊपर भार छोड़े पारौं ।

....हम्में चाहै छियौं, तोहें आपनों सास-ससुर से मिली जा । आपनों पत्नियो सें मिलिये-जुली कें रहों । हेकरे मैं भलाय दिखै छौं ।

आपनों सोभावों मैं परिवर्तन लानों बेटा । है रात-बेरात घरों सें बाहर दूसरै कन पड़लों रैहवों केकरौ अच्छा नै लागें पारें । तोरों कनियैनों यही लें दुखित छेलौं । आखिर के कनियैनें नै चाहै छै कि ओकरों पति ओकरै लुग रहें ।...हमरा ई कहतें कत्तें दुख लागै छै कि आय तक तोहें बहू के पास रैहवों तें की एक्को मिट्ठो बोल नै बोल्लों

होवैं ।....ऊ तें पत्नी रूपों मैं देवी ई घरों मैं ऐलों छौं बेटा । आय तक एक्को पैसा नुकाय कें नै राखलकी । बाँही, नाकी, गल्ला के एकेक आभूषण उतारी-उतारी दै देलकी, जरियो टा ना-नुकुर करलें रहें तबें । हम्मू ओकरों ई त्याग कें नै समझें पारलियै । सुख तें की, सम्मानों दियें पारतियै तें हमरा आय एतना दुख नै होतियै । आखिर-आखिर में घरों पर छप्पर चढ़ाय लें वैं नाड़ी के चूड़ियो निकाली कें दै देलकी । धन्य छै ऊ बेटी ।....हम्में तें कहै छियौं बेटा कि तोहें ऊ देवी कें समझै के कोशिश करों ।....घरों के आर्थिक स्थिति तोहें जानिये रहलों छों ।... आभी कुछुवो नै बिगड़लों छौं । भोरकों भुललों सांझे घोंर आवी जाय तें भुलैलों नै कहाय छै । हम्में आय जानकी बाबू कें एक चिट्टी लिखी दै छियै । तोरों लुग चिट्ठी लगाय दै छियौं । कल परसू तांय निकली जा । पता नै आयकाल हमरों मोंन कैन्हें बहुत घबड़ैलों लागै छै ।

सेमलें बाबू के सब्भे टा बात सुनलकै मतरकि कुछ बोललै नै आरो चुपचाप उठी कें आपनों कोठरी में चल्लों ऐलै । रात भरी ओकरों आंखी मैं बच्ची के फोटो घुरतें रहलै । बस यहें लागतें रहलै, जेना बच्ची आपनों गोदी में बुतरु लेलें ओकरा हंकैतें रहें । ओकरे इन्तजारों में महिनौ सें भुखलौ-प्यासलों मकान के बाहरी द्वार पर खाड़ी रहें, एकदम राह निहारतें । सेमल के मोंन बच्ची लें एकदम व्याकुल भै उठलै । ओकरा सें मिलै लें । पर सेमल दूसरों दिन की, दुओ साल बाद ससुराल नै गेलै । दू महिना नै । सेमल के बाबू समझैतें-समझैतें स्वर्ग सिधारी गेलै पर सेमल पर कोय असर पड़लों रहें हेनों बात नै छेलै । हों दू-एक चिट्ठी ई बीचों मैं जरूरे सेमलें बच्ची के नाम लिखलें छेलै । बहू हेने जेन्हों गुरू जी कोय चटिया कें लिखें । कै बार बीचों मैं सेमलं ससुराल जाय के मनो बनैलें छेलै मतरकि घंटे भर बाद मोंन ढीला पड़ी जाय ।

:: २२ ::

बच्ची बीहा के दस वर्षो के बाद आय फेनू जानकी बाबू के घोंर मैं एत्तें खुशी देखलों जाय रहलों छेलै । दू-दू खुशी एक्के साथ मिललों छै । बच्चिये के नौकरी के खबर नै ऐलों छै, बच्ची के पतियो के । वन विभाग में फॉरेस्टर के पद पर सेमल के बहाली होय गेलों छै आरो सेरिकल्चर विभाग में रौलर पदों पर बच्ची कें ज्वाइन करै वास्तें कागज ऐलों छेलै । दोनों कागज एक्के दिन, एक्के डाकिया देलें छेलै ।

हेकरों पहलें कि डाक बाबू कुछ मांगतियै, जानकी बाबू जेबों सें निकाली सौ रूपया के टाका डाकबाबू के हाथों मैं दै देलें छेलै ।

घरों में सब्भे बस एक्के बात कही रहलों छेलै, बच्ची एकदम भागवन्ती छै । लक्ष्मी कें जन्म देलें छै। दू-दू नौकरी एक्के साथ । घोंर तें धनों सें भरी जैतै । बच्ची के माय-बाबू ई सोचथैं निहाल होय उठै मतरकि बच्ची असकल्लों धनबादों मैं रहती केना ? कोय तें साथों में रहना जरूरी छै । मेहमान कें नौकरी वास्तें पटना जाय लें लागलै । एक्के जग्घों मैं केन्हौ कें नौकरी भै जैतियै तें अच्छा ।

तें बच्ची माय के चिन्ता कें देखी जानकी बाबूं ढाढस बंधैतें हुवें कहलकै,

—ई वास्तें चिन्ता करै के कोय कारण नै छै । एक आवेदन देला पर ई सब काम देखथैं-देखथैं होय जैतै । एत्तें दिन राजनीति में रहलियै तें कि एतनौ टौ लाभ हमरा नै मिलतै ।

मतरकि खबर करी कें जबें सेमल कें बुलैलों गेलै आरो वैं साफ-साफ इनकार करी देलकै, एक्के जग्घों मैं नौकरी करै सें, तें बच्ची के माय बाबू पर जेना पहाड़ टूटी पड़लै । पैहलों बार दोनों कें लागलै कि पहुना के दिल बच्ची सें बंधलों नै छै ।

—तें की करलों जाय ?''

—करलों की जाय बच्ची माय । हम्में सोचै छियै पहुना कें बच्ची साथे धनबाद भेजी दियै, जग्घों पर पहुंचैइयो ऐतै आरो रास्ता में

बात होतै तें हुवें सकें कि पहुना के दिमाग बदली जाय । अरे कोय भी आदमी आपनों पत्नी आपनों बच्चा सें अलग रहें पारें ? रहवो करतै तें कत्तें दिन । नौकरी एक-दू दिनों वास्तें तें नै होय छै ।

—तोहें एकदम ठीक सोचलें छों ।''

कहतें-कहतें बच्ची माय के मुंहों पर खुशी दौड़ी ऐलों छेलै ।

—एक बात आरो बच्ची माय, हम्में सोचलें छियै कि ऊ बंगाली के भीखनुपर वाला मकान बच्ची नामों सें खरीदिये दियै । हमरा पहुना के रंग-ढंग देखी थोड़ों घबराहट हुवें लागलों छौं । आबें हमरों जिनगी कत्तें दिन । अस्सी पचासी के हुवें लागलियै । आबें सोचलों-बेड़लों सबटा जल्दी-जल्दी निपटैये लेना ठीक ।

—हम्में तें कहभौं कि सबौरवाला दस बिघिया जमीनो बच्ची के नामें लिखी दौं । माय-बाबू के अभाव बच्ची कें कभियो नै बुझावों । जमीनों के की कमी छै । कत्तो बेटी के नामो लिखी दै छौ, तभियो तोरों दोनों बेटा जमींदारे बनलों रहतौं ।

बच्ची माय के बात सुनी जानकी बाबू के ठोरो पर मुस्कान आबी गेलै,

—तें ठीक छै, बच्ची के सामन तैयार करवाय दौ आरो तोंही पहुना कें जाय वास्तें कहियौ । की ? जरा मरदाना समझावें-बुझावें कम पारै छै, यही लें ।

जखनी रेलगाड़ी पर बच्ची सेमल के साथ चढ़लों छेलै, बड़ी खुश छेलै । ओकरा विश्वास छेलै कि सेमल आबें ओकरा छोड़ें नै पारें । असकल्ली ऊ वहाँ वियावानों, पहाड़ी जग्घों मैं केना रहतै । सेमल की है बातों कें नै समझी रहलों छै ।

छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक, छुक.....

रेलगाड़ी धुँइयाँ उड़ैलें-उड़ैलें आपनों दिशा मैं भागलों जाय रहलों छेलै । बच्ची बिजली कें बड़ी ममता भरलों हाथों सें सेमल के गोदी ओर बढ़ैलकै । बिजली सचमुचे मैं बिजलिये छेलै, जेना बिजली के बेलीफूल । आँख, मूँ, नाक के की गठन ! आय तक हेनों बच्चा कोय

नै देखलें होतै । ओकरा पर घुंघरैलों कारों चूल जेना चाँद के ऊपर उड़तें-उड़तें करिया बादल के एक टुकड़ा जमी गेलों रहें ।

सेमल पहलों बार आपनों बच्ची कें देखलें छेलै । सचमुचे अद्‌भुत रंग-रूप छेलै ।

—पकड़ों नी । जरा आपनों गोदी मैं लै कें देखों केन्हों शोभै छों ।

बच्ची थोड़ों मुस्कैतें हुवें कहलें छेलै ।

—छोड़ों-छोड़ों तोंही शोभों । हमरा बच्चा-बुतरु गोदी मैं नै लेना छै । हागी-मूती देतै तें बस....।

आरो सेमल बिजली कें आहिस्ता सें बच्चिये दिस हटाय देलें छेलै ।

बच्ची कें ई बातों सें तकलीफ तें होलों छेलै पर हेकरा ऊ एकदम पचाय गेलों छेलै, ई सोची कें कि ठिक्के तें हुनी कही रहलों छै।

अढ़ाय-तीन साल के बच्चे होला सें की होय छै । बच्ची कुछ देर चुप्पे रहला के बाद फेनू आहिस्ता सें बोललै,

—तें हमरों वहाँ रहै के बारे मैं की सोचलें छौ ?''

—सोचना की छै । हमरा खबर मिलथैं तोरों लें हम्में वहाँ एगो डेग ठीक करी देलें छियौं । हमरौ तें नौकरी करनै छै । हम्में तें वहाँ तोरा राखबौं आरो तुरत्ते लौटी ऐवौं । रातो भर ठहरै के कोय सवाल नै उठै छै ।

—है केना होतै । तोहें कुछुवे दिन तें वहाँ रहि कें हमरों सब व्यवस्था देखी-सुनी ला, ओकरे बादे निकलयों, जों जल्दिये निकलना छौं। नौकरी पर तें तोहें ई महिना के बादे नी जैवा ?''

—हेकरा सें की होय छै । तैयारी तें हमरा पहले सें करै लें लागें। हम्में पूछै छियौं, जो हम्में तोरों साथ चार रोज ठहरिये जाय छी तें कोन मारे तोरा लें स्वर्ग उतरी ऐतौं आरो नहिये ठहरै छियैं तें कोन तोरा पर पहाड़ गिरी पड़तौं । कान खोली कें सुनी लें, हम्में घंटों भर वहाँ ठहरै वाला नै छियौं कत्तो नाक-मूँ तोहें रगड़ों । हम्में एक बार जे सोचै

छियै, वही करै छियै ।

बच्ची ई सब बात सुनि संगमरमर के मूरते रं चुप भै गेलै । चुपचाप आपनों बच्ची पर नजर गड़ैली होली शांत । ओकरा समझै में नै आवी रहलों छेलै, आखिर आबें वैं की रं सेमल कें समझैतै । सेमल कें एतना तें समझनै चाहियों कि एक असकल्ली पत्नी पति के बिना अनजानों जग्घों में भला केना रहतै। ऊ भी बच्ची बूढ़ी रहतियै तें कोय डोंर भै नै छेलै । वैं मनेमन ढेर सिनी बात सोची गेलै ।

आरो ठिक्के में धनबाद पहुँचला के बाद सेमल बच्ची कें ओकरों लें ठीक करलों गेलों डेरा में उतारी वही टमटम सें घुरियो ऐलै जे टमटम सें ऊ वहाँ पहुँचलों छेलै । अपनत्व दिखाय कें नामों पर सेमले कुछ करलें छेलै तें बस एतनै कि सबटा सामान डेरा में सजाय-ध्जाय कें राखी देलें छेलै आरो डेरा सें निकलै वक्ती डेरै सें सटलों दूसरों डेरा में रहि रहलों मिसिर जी कें बुलाय कही देलें छेलै,

—जरा हमरों पत्नी कें देखतें रहियों । रात-बेरात कुछ्छु जरूरत पड़ी जाय तें संभाली दियौ ।

जाय वक्ती सेमल घुरियो कें नै देखलें छेलै आरो जिनगी में पहलों बार बच्चियो आपना सें अलग होतें सेमल कें देखैं वास्तें दरवाजा पर बाहर नै ऐलों छेलै । मतरकि ओकरों लें ठीक करलों गेलों एक कोठरी वाला डेरा में बैठी कें ऊ घंटों कानतें रहलै । पहलों बार ओकरों मनों में ऐलों छेलै कि पति के रहथैं चूड़ी फोड़ी लै आरो सिंदूर पोंछी लौं। ओकरों गोदी में ओकरों बच्चा कानतें बच्ची कें देखी-देखी कानतें-बिलखतें रहलै, मतरकि ओकरों ध्यान नै टुटलै । घंटो, कोठरी के मोखा लगी-लगी बच्ची कानतै रहलै, कानतें बेटी कें नीचें बिठाय । दोनों के कानवों-कपसवों बड़ा कारुणिक वातावरण बनाय रहलों छेलै।

:: २३ ::

बच्ची के डेरा हेने सुनाफड़ जग्घों में छेलै कि असकल्लों मरदानौ कें डोंर लागें रात होथैं एकदम सन्नाटा चारो तरफ फैली जाय। आस-पास आरो कोय मकान, आदमी नै छेलै बस ओकरों ऑफिस आरो ऑफिस मैं रहि रहलों बी. डी. ओ. श्रीवास्व के परिवार के सिवा । सांझ होतै जखनी जंगली पशु-पक्षी के आवाज हुवें लागै तें बच्ची के प्राण निकलें लागें । आपनों बेटी बिजली कें छाती सें सटाय ऊ बिछौना के नीचू दुबकी जाय ।

पड़ोसी मिसिर सें कुछ कहै-सुनै के सवाले नै छेलै । ई तें बच्ची कें दसे रोज बाद ऑफिस के चपरासी बखरी मंडल सें पता लागी गेलों छेलै कि एक नम्बर के पियांक छै मिसिर जी । आपनों पत्नी के साथें पहलें रहै छेलै । मतरकि छवो महिना नै होलै, हिनकों पत्नी तंग आवी कें नैहर भागी गेलै । पीवी-पावी कें मिसिर जी आपनों जनानी कें कत्तें बर्दास्त करतियै । 'बखरी मरड़ सें बात सुनी बच्ची मिसिर जी सें दस हाथ दूरै रहै । कत्तें जरूरत पड़ै, बच्ची मन मसोसी कें रहि जाय पर ओकरा सें कुछ नै कहै ।

दिनौ मैं बच्ची कम डरलों नै रहै । ओकरा आपनों डेरा सें एक कोस दूर सेंटर पर जाय लें लागै छेलै । रस्तो एकदम सुन्नों । दोनों तरफ जंगले-जंगल आरो ओकरों बीचों सें रास्ता गुजरै छेलै बच्ची के, सेंटर पहुँचै वास्तें । बीचों-बीचों मैं बांस आरो पत्ता सें बनैलों झोपड़ी मिलै । बच्ची कें मालूम छेलै, ई झोपड़ी जंगल-रखवाला के छेकै, बंदूक लै कें चौबीसो घड़ी तैनात । यही लें ऊ सुनसान रास्ता सें गुजरै मैं बच्ची कें ओत्तें डोर नै लागै जत्तें कि अन्हार होथैं बच्ची कें डेरा मैं रहें लागै ।

बच्ची के जिनगी मैं आबें जेना कोय नै रहि गेलों छेलै, एक ओकरों बेटी बिजली या कभी काल हाल पूछतें रहै वाला आफिसर श्रीवास्तव बाबू के सिवा । श्रीवास्तव बाबू छेवो करलै बड़ा उदार, बड़ा

भला, शील-स्वभाव दोनों सें । एकदम आपने बहिन रं मानना शुरु करी देलें छेलै बच्ची कें । बच्चियो जिनगी के एकेक दुख कही देलें छेलै । छुपावें नै पारलें छेलै वैं । आरो हेनों करि कें ऊ सच्चे में बड़ी होलकों होय उठलों छेलै ।

—कोय बात नै छै बहिन, जोंन जनानी मरदाना के साथ पावी ऊँचाई पर चढ़लों ओकरों खूबिये की ? जनानी आपनों इतिहास आपन्है गढ़ै, तभैं ऊ समाजों लें इतिहास गढ़ै छै ।...जरियो टा दुख हुवौं बहिन, तखनिये पुकारयौ, हम्में ऐवौं । होना कें हमरों नौकर-चपरासी सब आपनें लें समझियों ।

श्रीवास्तव बाबू जबें मिलें तें घुमाय-फिराय कें यही बोलै आरो ई बातों सें बच्ची कें बड़ी बोंल मिलै ।

रात कें सुतै वक्ती जबें ऊ बी. डी. ओ. श्रीवास्तव बाबू आरो आपनों पति सेमल के चेहरा आपनों आँखी के सामना लानै तें ओकरों मोंन केना-केना करें लागै। बस रहि-रहि कें ओकरों आँखी मैं सेमल के एक्के चित्र घुमी-घुमी जाय कि घरों मैं घुसी ऐलों कुत्ता या बिलाय कें घेरी-घेरी मारी रहलों छै । अंगना के डेड़िया भिड़काय कें । बच्ची आपनों मनों कें जबर्दस्ती दूसरों दिस खींची कें लै जाय मतरकि ओकरों आँखी के सामना फेनू होने रं के दृश्य आबी कें खाड़ों होय जाय; सेमल टीनों के पीछू छुपलों भोकसों रं के मुसों लै आनलें छै। आरो ई सब दृश्य कें सोचथैं बच्ची के रोआं-रोआं भय-घृणा सें सिहरी उठै । आरो ऊ उठी कें खाड़ी भै जाय, श्रीवास्तव के क्वार्टर दिस मूँ करी कें । ओकरों सब घृणा, सब भय दूर होय जाय । तबें बच्ची बस एक्के बात सोचै बी. डी. ओ. बाबू जरूरे ऊ जन्मों मैं हमरों भाय रहलों होतै। भाइयो आय तक हमरा हेनों प्यार नै देलें होतै।

पाँच साल बाद ।

—देखों भाभी जी, चाहे तोहें हमरा कत्तो बाहर निकालै लें चाहों मतरकि यहाँ से टसकै वाला नै छियौं ।'' मिसिर जी के मुँहों सें दुर्गन्ध निकली रहलों छेलै ''देखों भाभी तोरों देख-रेख के भार भायजी

हमरा पर छोड़ी गेलों छौं आरो आय तक तोहें हमरा सें सहयोग की, पूछ-पाछ भी नै करलौ । आय तें हम्में तोरों हाथों के खाना खाय कें जैभौं । हमरों घोंर भागलपुरे छेकै ।

—हम्में कहै छियौ, तोहें बाहर निकली जा । तोहें केकरा कहला पर हमरों भंसा मैं घुसलौ ! तोरों हिम्मत केना कें पड़लौ ।''

—हेकरा मैं हिम्मत के की बात छै । जहाँ भाभी वहाँ दियोर ।

आरो ई कही मिसिर जी धीरें-धीरें बच्ची लुग आवै के कोशिश करें लागलै । बच्ची कें कुछ समझै मैं नै आवी रहलों छेलै कि वें की करें । कुछ रास्ता बचै के नै देखी कें ऊ भंसा से मिसिर जी कें धकियैतें होलें बाहर निकली ऐलै आरो 'भाय जी' बोली कें जोर सें हाँक लगैलकै।

हिन्नें बच्ची के हाँक लगाना छेलै कि हुन्नें से बी. डी. ओ. श्रीवास्तव हाथों में बंदूक लेलें चपरासी बखरी मण्डल के साथें आवियें तें गेलै । आखिर संकट के पुकार छेलै से श्रीवास्तव बाबू बिना कुछ आवाज लगैले दनदनैले बच्ची के डेरा घुसी ऐलै । तब तक मिसिर जी भंसा सें बाहर होय डेरा सें निकली जाय के कोशिशो मैं छेलै ।

—मिसिर तुम ? यहाँ क्या कर रहे थे ?''

—ऐसा है साहब कि घर मैं कुछ खाने को नहीं था, सोचा भाभी से ही कुछ लेकर खा लूँ । बस इसी से दो रोटी मांगने चला आया था। बगल में दुकान भी तो नहीं है कि कुछ ले आता ।

—मिसिर, मुझे तुम्हारी हरकतें मालूम हैं । बदतमीज, एक भली औरत के घर मैं घुस आने की सजा तुम्हें मालूम है । आज तुम्हें दुकान मैं कुछ नहीं मिला, कल से तुम्हें कभी सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी । में तुम्हारे लिए वह व्यवस्था कर दूंगा ।

—ऐसा न कहिये साहिब, मेरे बीबी-बच्चे मर जाएंगे ।

मिसिर जी स्वर में एकबैगे गिड़गिड़ावें लागलों छेलै ।

—बीबी-बच्चे, हुँह । उन सबों को तो तुमने अपने व्यवहारों से कब का मार दिया है । मुझे सब पता है । अब उसी कर्म का फल भुगतोगे ।

—साहब...''

—तुरंत बाहर निकल जाओ, वरना मुझे पुलिस को बुलाना होगा।

मिसिर जी के बाहर होथें श्रीवास्तव बाबू बच्ची कें मजबूत स्वर में कहलकै,

—घबराने की कोई बात नहीं बहन । घर घुसा, तो इसकी सजा इसे कल ही मिलेगी जाओ, खाओ-पीओ आराम करो । में कल से एक चपरासी तुम्हारे दरवाजे पर लगवा दूंगा । डर-भय की कोई बात न सोचो।

....बखरी, आज की रात इनके दरवाजे पर अपना बिछावन लगा लो । कल से सुक्खी की ही रात मैं यहाँ सोने की ड्यूटी रहेगी । अच्छा तो मैं चलता हूँ बहन ।

ऊ रात बिछावन पर पड़लों-पड़लों बच्ची सोचतै रहलै कि आखिर वैं की करें ? कभी मनों में सोचै, आबें ई जग्घों में रहना बेकार। कभियो कुछु खतरा हुवें पारें । फेनू श्रीवास्तव बाबू के खयाल आवै, कि हुनकों रहतें के की बिगाड़ें पारें । मतरकि हुनिये यहाँ कब तक रहतै । बदली तें एक न एक दिन होनै छै । हमरा जोगै लें थोड़े बैठलों रहतै ? तबें फेनू ?

....तें की ओकरा नौकरिये छोड़ै लें लागें । ई विभाग बिहार में आरो काहीं छै की नै छै बदली कराय लौं ।...जों नौकरी कें छौड़ी दै छियै तें देखें वाला ही के छै । एक बाबू-माय के आसरा छेलै, हुनियो दू साल पहलें महिना भरी के अन्तर सें स्वर्ग सिधारी गेलै । भाय भौजाय के आसरे की । बाबुवे रहतें जबें नै पूछै छेलै, तें आबें की आसरा !

बाबू के याद ऐथैं जानकी बाबू के लिखलों आखरी चिट्ठी के एकेक शब्द बच्ची के दिमागों में घुमें लागलै,

हमरों बेटी,

खूब फलों-फूलों । हम्में जिनगी में कभियो ई नै मानलियै कि हमरा कोय बेटी छै । तोहरे बेटा मानतें ऐलें छियौं । आरो कुछुवो नै

लिखी कें बस एतनै लिखै छियौं कि सबौर वाला धनखेत तोरों नामें रजिस्ट्री करी देलें छियौं आरो भीखनपुर मैं एक कोठियो तोरों लें खरीदी देलें छियौ, तोरे नामें । आबें हमरों जिनगी के कुछुवे भरोसों नै । हिम्मत नै हारियों बेटी ।

तोरों बाबू
जानकी प्रसाद

ठीक जानकी बाबू के चिट्ठी मिलला के एक्के रोज बाद बच्ची कें तार मिललों छेलै कि जानकी बाबू इन्तकाल करी गेलात । बच्ची के छाती फाटी कें रहि गेलों छेलै । सोमवार कें तार मिललों छेलै आरो बुध कें भागलपुर आवै के वैं मोंन बनाय लेलें छेलै कि मंगले के फेनू तार डाकिया पहुँचैलें छेलै—माय के स्वर्गवास के तार । बच्ची पर तें जेना पहाड़-पर्वत गिरी गेलों रहें । ऊ भीतरे भीतर छटपटाय के रहि गेलों छेलै । आरो हठाते वैं आपनों भागलपुर जाय कें निर्णय बदली लेलें छेलै । तहियों सें बच्ची भागलपुर में गोड़ नै राखलें छेलै ।

आय जबें भागलपुर जाय के बात वैं सोचलकै तें एकेक करी कें सब बितलों बात ओकरों दिमागों मैं घूमी गेलै । 'मतरकि यहाँ रहनौ तें मुश्किल वैं मनों मैं सोचलकै जे भी हुवें ऊ यहाँ सें कल्हे चल्लों जैतै। बस श्रीवास्तव बाबू कें खाली भोरे खबर करी देना छै ।

दूसरे दिन सुबह ।

—कि बात छेकै बहिन ? है अटैची-उटैची सहित ? समझी गेलियै । कोय बात नै छै । तोरों बदली हम्में मुंगेर कराय दै छियौ । वहूँ ई विभागों के एक शाखा छै । तोहें भागलपुर पहुँचवा आरो पाँच रोज के बाद तोरों कागजों पहुँचतै । भाय कें रहतें बहिन कें चिन्तै की? हमरों ड्रायवर तोरा स्टेशन पहुँचाय आवै छौं ।

आरो जखनी बच्ची जीप पर चढ़तियै ऊ हठाते बी. डी. ओ. श्रीवास्तव बाबू के गोड़ों पर एकदम झूकी ऐलै । ओकरों लोर हुनकों गोड़ों पर झरझराय ऐलों छेलै ।

:: २४ ::

अरे बच्ची बिटिया ! आव! कत्तें उमरदराज लागें लागला ।

भागलपुर स्टेशन सें बाहर ऐथैं कोय टमटम वाला पुकारलें छेलै।

—के रहमान काका ? अरे तोहें टमटम हाँकें लागलौ ?''

—आरो तबें की करतियै बेटी । टमटम चलैवों तें पुस्तैनी काम ठहरलै । फेनू घरों मैं हेनों फूट पड़लै कि हेकरों सिवा कोय रास्ता नै बची रहलों छेलै ।''

रहमान मियां बच्ची के सामान टमटम पर लादतें-लादतें कहलकै। तब तक बच्चियो टमटम के पीछू में बैठी चुकलों छेलै । रहमान मियां के घोड़ा के चारो तरफ चाबुक घुमाना छेलै कि घोड़ा टप-टप करी कें बढ़ी चललै । चाबुक घुमैतै-घुमैतै रहमानें कहलकै, ''बाबू तें नै रहलों बेटी मतरकि तोरों लें जे हवेली खरीदी देलें छौं ओकरों कोय जोड़ नै हुवें पारें । पहुनै वही हवेली मैं आबें रहै छौं । सुनै छियौं कि यहां कोय ऑफिसों मैं बदली कराय लेले छौं । तहूं बेटी, कैन्हें नी यहीं कोय ऑफिसों मैं बदली कराय लै छों । घर-परिवार सें दूर रहला पर की शांति मिलै छौं ? सुक्खे नोंन-रोटी मिलें, पर परिवार, परिवार होय छै ।

आरो कुछ देर चुप रहला के बाद रहमान मियां पूछलें छेलै,

—की बेटी, तोहें इखनी आपने वाला हवेली नी जैवा ?

—हों काका । वहाँ नै जैवों तें नैहरा मैं आबें रहिये गेलै के ? पर नै काका, पहले भैया-भाभी सें मिलनै अच्छा होतै ।

—आबें हम्में की कहियौं बेटी ।

कहतें-कहतें बच्ची आरो रहमान मियां दोनो के कंठ भर्राय ऐलों छेलै ।

:: २५ ::

बच्ची के आवै के खबर लगना छेलै, कि सेमल के सबटा खुशी जेना हेराबें लागलै । जोन दिनो सें भीखनपुर वाला हवेली बच्ची लेली खरीदलों गेलों छेलै ओकरों दसे रोज बाद सें सेमल यै मैं रहना शुरु करी देलें छलै । जानकी बाबू के राजनीतिक लाभ उठैतें आपनों बदलियो भागलपुरे कराय लेलें छेलै । आरो सास-ससुर के मरला के बाद तें आपनों मैइयो के वही हवेली में लै आनलें छेलै ।

जखनी सेमल कें खबर लागलै, तें ओकरों सुक्खों पर लागलै जेना पाला पड़ी रहलों छै ।

—सुनै छियौं बेटा, पतोहू आवी गेलों छै । भाय-भौजाय कन आवी कें राती ठहरलों छै । रहमान मियां आवी कें खबर करी गेलों छौं। यहें कहलकौं कि 'भोरे बच्ची बिटियो ऐतौं । आबें ?'

सेमल मांय सशंकित बोली मैं सेमल सें पूछलकै ।

—हमरो मालूम छै । मतरकि हेकरा मैं घबड़ाय के की बात छै। हम्में तें यहू तक पता लगाय लेलें छियै कि ऊ नौकरी छोड़ी कें नै ऐलों छै । मुंगेर मैं नौकरी करतै । अच्छे तें होतै कि पुस्तैनी घरो के जोगवारी होय जैतै । तहुं बीचों बीचों मैं वहीं रहियैं । घरों मैं आरो कोय तें छै नै कि ओकरों देखभाल करतै । हेनों नै करला सें कहीं नौकरिये छोड़ी ऊ भागलपुर आवी कें बसी गेलौ तें तोहीं समझें ।

—देख बेटा, हमरा मुंगेर मैं रहै सें कोय आपत्ति नै । मतरकि हमरों साथ रहला सें तोरों वंश नै बढ़तौ । कुलों मैं बेटा नै होला सें वंश-वृद्धि के बात केना सोचलों जावें सकें छै । हम्में तें कहभौं कि तोंही कनियांय के साथ मुंगेर मैं रहों । हम्में ई मकान के देखभाल करै छियौं । पतोहू एक बेटा के माय बनी जाय फेनू हमरा की । हमरा जहाँ राखै लें चाहों, जेना चाहों, रहै लें तैयार छी ।

ई कही माय आन कोठरी मैं चल्ली गेलै तें सेमलो सोचें लागलै, ठिक्के तें माय कहै छै, बेटा के बिना वंश की, परिवार की ! फेनू एत्तों

बड़ों हवेली के कोय मालिक तें होनै चाहियों । नै तें ई मकानो सरकारिये होय जैतै ।....फेनू ऊ दिन वैं तांत्रिको तें यही कहलें छेलै, ले बेटा, ई ताबीज राखी ले । शुभ दिन देखी कें आपनों बहू के बाँही पर बांधी ऊ रात ओकरों साथ रहला पर तोरा जरूरे बेटा के परापत होतौ। तांत्रिक के वचन छेकै बेटा, खाली नै जावें पारें, भगवान के वचन खाली चल्लों जाय तें चल्लों जाय ।' साधु के वचन याद ऐथैं सेमल एकबैगे गुदगुदाय उठलै । तें अबकी बच्ची के साथे रहलों जैतै ।.... महिनौ भरी...मतरकि ओकरा नौकरी पर जे आना छै । 'ओकरों' मनों मैं प्रश्न उठलै ।''.. जे भी हुवें, ऊ बच्ची के साथें मुंगेर चल्लों जैतै । महिनौ भरी के छुट्टी लै कें । वांही रहतै । बेटा के सुख सें बढ़ी कें नौकरी के सुख नै हुवें सकें । फेनू है धनो केकरा लें, जबें बेटे नै रहतै ।... मतरकि बच्ची के नै जानौ केन्हों रुख होतै । नौकरी पर छोड़ी ऐला के बाद ऊ तें घुरियो कें ताकै लें नै गेलै, मरली की बचली । की जरूरी छै, आबें बच्ची वही-वही मानिये लेतै, जे-जे वैं कहतै !'

सेमल के मन एक बार फेनू शंका खाड़ों करी देलकै आरो अनचोके ऊ उदास होय उठलै । चिंता मैं ऊ आपनों कोठरी मैं चमगादड़ नांखी चक्कर लगावें लागलै । कि हठाते ओकरों गोड़ रुकी गेलै । ओकरों मनें कुछ रास्ता निकाली लेलें छेलै आरो ओकरों चेहरा पर खुशी के भाव दिखावें लागलों छेलै ।

सेमल दूसरों कोठरी में पहुँचलै आरो जल्दी-जल्दी आपनों बाहर जायवाला पोशाक चढ़ाय लेलकै । भोरकों आठ बजी रहलों छेलै । वैं आपनों बक्सा निकाली कें जमीन पर राखी देलकै आरो कुछ कपड़ा वैं मैं, कुछ कपड़ा बाहर बिखरलों-बिखरलों राखी देलकै । आरो बाहर निकली खिड़की सें बच्ची कें आवै के इन्तजार करें लागलै । कि तखनिये बच्ची कें रहमान मियां के टमटम सें ऐतें वैं देखलकै । सेमल उल्टे गोड़ लौटी झटपट आपनों बक्सा फेनू सड़ियाय में जुटी गेलै ।

रहमान मियाँ बच्ची के सामान उठैतें आरो बच्ची कें रास्ता बतैतें सीधे दलानी पर चढ़ाय देलें छेलै । सामनै मैं सेमल बक्सा सड़ियैतें

दिखाय पड़ी गेलै ।

—अरे तोहें ।

अनचोके सेमलें आपनों चेहरा पर ढेर-ढेर खुशी लै आनलें छेलै आरो हेनों भाव बनैलें छेलै जेना बच्ची के भागलपुर ऐवों ओकरा मालूमे नै रहें । रहमान मियां सामान रखी कें नीचें उतरी गेलों छेलै ।

—हम्में तैयारिये करी रहलों छेलियौं तोरा लुग जाय के । है सोची लेलें छेलियै कि तोरों नौकरी-चाकरी सें हमरा कुछ नै लेना, आबें तोरा सें अलग रहि कें हमरा नै जीना छै । एत्तें बड़ों हवेली एक तोरे बिना कत्तें-कत्तें सुनें लागै छै ।....हम्में जानै छियै, माय-बाबू मरलौ पर तोहें भागलपुर कैन्हें नी ऐला । हम्मू वही सोची के तोरा लेलें नै गेलियौं। ओकरों बाद यहू सोचलियै कि तोरा मैं गुण छौं, योग्यता छौं । हेकरा हेने कें बर्बाद करला सें की फायदा ! से बहुत दिनों बादो तोरा वहाँ सें नै आनलियौं । बीचों में कै बार मोंन करलै कि तोरा चिट्ठिये लिखयौं, जों तोरा वहाँ मोंन नै लागौं तें नौकरी-चाकरी छोड़ी कें यहाँ चल्लों आवों । मतरकि सवाल नौकरी या पाँच सौ रुपया के नै छेलै, तोरों योग्यता-प्रदर्शन के छेलै । आइयो हम्में नै चाहै छियै कि तोहें नौकरी छोड़ों । पर की करौं, आबें तोरों बिना जिनगी बड़ी सुन लागें लागलों छै । देखी रहलों छौ नी, है तोरै लै आनै के तैयारी छेलै। अच्छा होलै कि तोहें आबी गेला । लागै छै, हमरों मन के पुकार तोहें सुनी लेलौ या भगवाने तोरा हमरों मोंन देखी कें यहाँ लै आनलकौं ।

कहतें-कहतें सेमलें बच्ची के हाथ पकड़ी लेलें छेलै आरो आपनों विश्वास के विरुद्ध सेमल के ई सब बात सुनी-देखी बच्ची एकदम गली गेलों छेलै आरो ओकरों गोड़ों पर गिरी कपसी-कपसी कें कहें लागलों छेलै,

—आबें तोहें हमरा एक्को दिनों वास्तें नै छोड़ियो, नै तें हम्में जहर खाय कें जान दै देभौं । तोहें नै जानै छों कि तोरों बिना हमरों की स्थिति होय जाय छै ।''

—चुपें रहों । आबें हेनों कहियो नै होतै । हम्में हमेशा तोरे

साथ रहवौं ।...चुप रहों । देखों बेटी केना घुरी-घुरी कें हमरा दोनों कें देखी रहलों छौं ।

आरो सेमलें बच्ची कें एक ओर करि आपनों बेटी कें गोदी में उठाय लेलें छेलै, लगातार ओकरों गाल कें तीन-चार बार चूमतें हुवें । 'अरे कत्तें बड़ी होय गेली हमरी बेटी ! माय देखैं, तोरों पतोहू आवी गेलौ।...देखैं-देखैं तोरों पोती कत्ती बड़ी होय गेलों छौ । 'आरो ई कही बेटी कें लेलें एक ओर बढ़ी गेलों छेलै । बिजली हैरत सें ई सब देखथैं रहि गेलों छेलै । ओकरा कुछू समझै मैं नै आवी रहलों छेलै, कि ओकरा चुम्मा पर चुम्मा लै वाला आदमी के छेकै । बस टुकुर-टुकुर गोद लै वाला कें देखतें चल्लों जाय रहलों छेलै । पता नै, हैरत सें या डरों सें ।

:: २६ ::

सेमल के व्यवहार देखी बच्ची कें यही लागलों छेलै कि आबें सब कुछ पहलकों बदली गेलों छै। ओकरा बितलों बातों के कुछुवो दुख नै रहि गेलै । बस हेनों बुझावै लागलै कि भोरकों भुलैलों सांझे लौटी ऐलों छै। मनों में नया सिरां सें बचलों जिनगी कें संवारै के बात उठतें रहै । आवें भगवान के भक्तियों में बच्ची कें मोंन खूब लागें लागलों छेलै । बस ओकरों मनों में यहें बात उठै कि सेमलें ओकरा एत्तें मानें लागलै, तें भगवाने के कृपा सें । वैं सोचै-ओकरों दुख भगवानों सें नै देखलों गेलै, तहीं सें सेमल के सोभाव मैं हेनों बदलाव लानी देलें छै ।

श्रीवास्तव बाबू के कैहले मुताबिक ठीक पाँचे रोज बाद एक रजिस्ट्री डाक बच्ची नामें ऐलों छेलै । चिट्ठी साथें टाइप करलों एगो परचो छेलै । मुंगेर जाय कें ज्वाइन करै लें । बच्ची बड़ी हुलसी कें कागज सेमल के देखैलें छेलै आरो कागज देखी बच्चियो सें जादा खुशी

सेमल कें होलों छेलै । ऊ दू दिन ताँय बच्ची के आगू-पीछू घुमतें-करतें रैल्हों छेलै, जेना सेमल के जिनगी मैं ओकरों सिवा आरो कोय्यो छेवै नै करै ।

कागज मिलला के तीन रोज बाद बच्ची मुंगेर जाय नौकरी करना शुरू करी देलें छेलै । ओकरों साथ सेमल आरो सासो गेलों छेलै। पैहलों बार सेमल बच्ची साथें महिनौ-महिनौ साथ रहलों छेलै । ऑफिस सें आवै के पहले सेमल घोंर लौटी आवै । ओकरों एकेक इच्छा जरूरत के ख्याल राखै सेमलें । पता नै तांत्रिक के स्मरण करी कें या फेनु आरो कुछ सोची कें, या फेनु सब्भे बात सोची कें । जे भी हुवें सेमल के हेनों आत्मीय व्यवहार अपना प्रति देखी कें बच्ची के जिनगी मैं जेना सौ-सौ बसन्त एक्के साथ आवी गेलों छेलै । आरो एक शुभ दिन देखी कें सेमलें बच्ची के बाँही पर तांत्रिक के देलों ताबीजो बांधी देलें छेलै । बच्चियो के खुशी के कोय ठिकानों नै रहि गेलों छेलै ।

पर ऊ दिन तें बच्ची कें मोंन एकदम्मे बैठी गेलों छेलै जबें ट्रेनिंग लें ओकरा पटना जाय के नोटिस मिललै । सेमल सें अलग होय के बात वैं आबें सोचै नै पारै छेलै । ऊ भी पाँच-छों रोजों के ट्रेनिंग रहतियै तें एकठो बात छेलै । पाँच-पाँच महिना के ट्रेनिंग । कागज मिलथैं बच्ची के दिल बैठी गेलों छेलै । ओकरों मोंन यही करलें छेलै कि नौकरिये छोड़ी देना अच्छा । मतरकि सेमलें समझैलें छेलै कि केना नौकरी-चाकरी करला सें औरत के बुद्धि-व्यक्तित्व बढ़ै छै । पाँच-छों बरस जबें ऊ दोनों अलग अलग रहि कें रहें पारै छै तें ई पाँच महिना की छेकै । दिवस जात नहीं लागहु बारा । देखथैं-देखथैं दिन केना पार होय जैतै, हमरा दोनों मैं से केकरौ पता नै चलतै । पाँचे महिना के तें बात छै, फेनू तें जिनगी भर साथें रहना छै ।

सेमल के एत्तें-एत्तें समझैला पर बच्ची ट्रेनिंग वास्तें पटना जाय लें तैयार होय गेलों छेलै, आरो सेमले के कहला पर बच्ची आपनों पेमेन्ट उठाय कें ऑथिरिटी सर्टिफिकेटो सेमल कें दै देलें छेलै । आपनों ऑफिसरों कें कही देलें छेलै कि ओकरों बदला ओकरों पतिये कें पाँच

महीना तांय रूपया उठाय के अधिकार रहतै ।

जोन दिन ऊ ट्रेनिंग लें सेमल सें अलग होय रहलों छेलै, पाँव साथें ओकरों मनो भारी-भारी छेलै । ऊ वही भारी गोड़ आरो मनों सें सेमल सें अलग होलों छेलै । मतरकि पटना पहुँची कें ऊ आपना कें सेमल के यादों में डुबाय बड़ी खुश रहें लागलों छेलै ।

दिन भरी ट्रेनिंग आरो रात कें वही सेमल के याद । बीतलों कुछ महिना के एकेक बात याद करी कें बच्ची गाछ पर फुदकतें गिलहरिये नाँखी गुदगुदैतें रहै ।

आरो देखथैं-देखथैं महिना बीती गेलै । बच्ची के बेताबी आरो बढ़ी गलै । सेमल ओकरों वेतन उठाय कें भेजतै, साथे-साथ चिट्ठी । वै चिट्ठी मैं कत्तें रं के मन हुलसावै वाला बात होतै । ई सब बात सोचथैं बच्ची के गोड़ों मैं जेना पंख आरो घुंघरु एक्के साथ बंधी-बंधी जाय । मतरकि वेतन नै ऐलै । सेमलें वेतन उठाय कें भागलपुर चली देलें छेलै, माय के साथें लेलें आरो बच्ची पटना में ई सोचतें रहलै, 'हुवें नै हुवें हुनकों मोंन खराब होय गेलों होतै । नै तें ई हुवै नै पारें कि वेतन नै भेजै । की हुनी नै जानै छै; ई जंगल-पथार मैं हम्में टाका बिना केना रहवै ? के हमरा रुपया देतै ? केन्हौं-केन्हौं हम्में एक महिना काटलें होवै । जरूरे हुनकों तबीयते बहुत खराब होय गेलों छै, जे हुनी हमरों वेतन नै भेजें पारी रहलों छै ।....खैर वेतन के कोय बात नै छै, नै ई महिना मैं नै अगला महिना मैं । दोनों महिना के वेतन तें ऐवै करतै । आपनों ऑफिसरों सें कही कें रूपया लै लेबै, की होतै, आगू महिना मैं कर्जा चुकाय देबै । बस ईश्वर करें कि हमरों पति के तबीयत जल्दी ठीक होय जाय ।' आरो बच्ची आपनों ऑफिसर सें महिना भरी के खर्च चलाय लें रूपया कर्ज रूप मैं लै लेलें छेलै ।

मतरकि दूसरो महिना जबें बच्ची कें वेतन नै मिलतै तें ओकरों शंका एकदम उल्टी गेलै । वैं, मुंगेर आफिसर कें चिट्ठी लिखलें छेलै कि वेतन सेमल उठाय रहलों छै कि नै ? आरो जबें ई जानलकै कि सेमलें दोनों महिना के वेतन उठाय लेलें छै तें ओकरों मोंन आपनों पति लें

वही घृणा सें भरी उठलै । ओकरों मनों मैं होलै वैं आपनों आफिसरों कें चिट्ठी लिखी दै कि हमरों वेतन हमरों पति कें नै दै कें हमरा लुग डाक सें भेजी देलों जाय । मतरकि ई बात लै कें ओकरों आफिसरें की सोचतै ।' यही सोची बच्ची एकदम शांत होय गेलै ।

तेसरों महिना । चौथों महिना । पाँचवों महिना ।

सेमल बच्ची के वेतन उठैतें रहलै आरो बच्ची वहाँ केकरा-केकरा सें नै कर्जा लै आपनों ट्रेनिंग पीरियड काटतें रहलै ।

हेनों आदमी के साथ जिनगी कटै के बात सोचवों एकदम फिजूल...अकेलों रहि जिनगी काटवों दुखदायी छै जरूर, मतरकि हेनों मरद के साथ रहवों तें जीते जी नरक मैं सड़वों होतै । जे भी हुवें, ऊ आवें नै तें मुंगेर जैतै, नै तें भागलपुरे । यही बदली कराय लेतै । बच्ची सबकुछ सोचतें मनों मैं यहू दृढ़ संकल्प करी लेलकै ।

आरो बच्ची करलकै भी वही ।

वैं वही सें श्रीवास्तव बाबू कें एगो चिट्ठी लिखलें छेलै, सब कुछ खोली कें लिखतें हुवें । ओकरा श्रीवास्तव बाबू पर अथाह विश्वास छेलै, आरो विश्वासे अनुरूप हुनकों लिखा-पढ़ी, दौड़-धूप करला के बाद बच्ची कें पटनै के एक आफिस मैं बदली होय गेलों छेलै । ई सब मैं जानकी बाबू के प्रतिष्ठा हमेशे मददगार बनै छेलै ।

आरो हेकरे साथ बच्चीं आपनों एक नया जिनगी शुरु करै के नींव डाललकै ।

पटना के आफिसों में काम करतें बच्ची कें पाँच वर्ष आरो बीती गेलों छेलै । सहारा के नाम पर ओकरों पास किशोर होती बिजली आरो चार वर्ष के बेटा अश्वघोष ही रहि गेलों छेलै ।

ई संयोग छेलै या भगवान के कृपा या तांत्रिक के वरदान । कोय कुछ नै कहें पारें, मतरकि अश्वघोष के जन्म कें बच्ची परमेश्वरे के असीम कृपा मानलें छेलै ।

तब्भे सें नै तें बच्ची सेमल कें एक्को दिन याद करलें होतै, नै तें सेमलें बच्ची के खोज-खबर लै के सोचलकै । दू धारा मैं दू जिनगी

बहें लागलों छेलै, एक दूसरा सें अलग-बेखबर । पता नै सेमल की सोची रहलों छेलै, मतरकि बच्ची तें एकदम बदली गेलों छेलै, आपनों पत्नीत्व के सब जेवर-जेवरात उतारी कें । यहाँ तक कि पाँच बरस आरो बीती गेलै । बच्ची कें यहू नै खयाल होलै कि ओकरों कोय ससुराल छै, ओकरों पति ओकरों बिना केना रहतें होतै ।

चिरिंग के कौंध रं कभी-कभार सेमल के याद आवी गेलो रहें तें आरो बात छै ।

आखिर बच्ची कें दुक्खे कोन बातों के रहि गेलों छेलै । पन्द्रह सोलह बरस के बेटी बिजली होय चल्लों छेलै आरो दस-बरस के बेटा अश्वघोष । बच्ची कभी-कभी दोनों कें सामना खड़ा करी कें देखै एकदम चाँद-सुरुज के जोड़ा जेना ओकरों ऐंगना मैं उतरी गेलों छेलै । आरो वैं दोनों कें आपनों छाती सें सटाय लै ।

:: २७ ::

तोहों !''

कैन्हें, आबें हमरों बहिन बहुत सुक्खों मैं छै तें की ओकरों रिटायर्ड भाय देखौ लें नै आबें पारें !

श्रीवास्तव बाबू मुस्कैतें हुवें कहलें छेलै । रिटायर्ड होथैं सचमुचे मैं हुनी कत्तें बूढ़ों हेनों लागें लागलों छेलै ।

—नै भाय साहब, तोरा देखी कें हमरों जिनगी के खुशी दसगुणा बढ़ी गेलों छै । तोहें कभियो हमरा हमरों बाबू के अभाव नै बुझावें देलों, एत्तें बड़ों उपकार हमरा पर आरो केकरों छै !

—अरे हेनों कोय बात नै छै बहिन । आदमी कुछ अच्छा काम करै छै तें आपनै कें जीवित राखै लें । फेनू आदमी होय के नातें

एतनाटा करवों तें हमरों धर्म छेलै । तोरों हेनों बहिन लें आपनों सौंसे जिनगियो तोरों खुशी में लगाय देवों कोय मानें नै राखै छै।

ई कहतें-कहतें श्रीवास्तव बाबू आपनों अटैची लेलें डेरा के भीतर घुसी ऐलै, बच्ची पीछू-पीछू । आरो एक कुर्सी आपने सें खींची वै पर बैठते कहना शुरु करलकै,

—तोहें की समझै छों बहिन, तोहें कुछ नै हमरा खबर करला तें की हमरा कुछुवो नै खबर होतै । आय तोरा एकटा बात बताय दै छियौं कि तोरों बाबू हमरों बाबू के पकिया मित्र छेलै । एक्के साथ पढ़लकै, एक्के साथ राजनीतियो । तोहें है सब कुछुवो नै जानै छों ।

है तें हम्मू नै जानै छेलियै कि तोहीं जानकी चाचा के लड़की छेकी । जखनी तोरों कागज-पत्तर देखलें छेलियै तैहियो सें हमरों खुशी के कोय ठिकानों नै रहि गेलों छेलै आरो मने-मन सोची लेलें छेलियै कि तोरों खुशी लें हमरा ऊ सब करना छै, कि दुनियाँ देखें ।.....मतरकि बाते कुछ हेनों होय गेलै कि...। तोहें है नै समझियों कि वहाँ सें तोरों ऐला के बाद हम्में तोरों खोज-खबर नै लेतें रहलियौं...बोलों कि तोरा ट्रेनिंग-पीरियड में वेतन नै नी मिललौं ? तोहें ऑथरिटि सर्टिफिकेट आपनों पति कें दै देलों छेलौ ? बोलों, ट्रेनिंग-पीरियड में तोरों ऑफिसरें सहयोग करलकौ ? मुंगेर सें लै कें पटना तक तोरों एक-एक दिन के निगरानी हम्में टेलीफोन सें करी रहलों छियौं । ओकरों सें पहलें, जबें तोहें हमरा पटना लें चिट्ठी लिखलें छेलौ ।

श्रीवास्तव बाबू के एकेक बात सुनी कें बच्ची हर्ष आरो दुक्खों के सागर में डुबतें-उतरैतें रहलै । ऊ कुछ बोलें नै पारी रहलों छेलै ।

—तें आय हमरों आवै के एक खास मतलब छै । यानि कि हम्में तोरा सें कुछ मांगै लें ऐलों छियौं ।'

—की ? बच्ची के सोंसे देह में एक वैगे अथाह खुशी दौड़ी ऐलै।

—हम्में चाहै छियै कि बिजली के शादी पूर्णिया वासी रामसेवक के बेटा सहजानन्द से करी देलों जाय । लड़का बड़ी कर्मठ छै । बोकारो के एक सरकारी आफिस में मैनेजर छै । रामसेवक बाबू खुद हमरों पास

ऐलों छेलै । लड़की कें हुनी देखलें छै । आबें हुनकों हेने जिद छै कि हमरा यहाँ तांय आभै लें लागलों । हम्ममें रामसेवक बाबू कें जानै छियै। एक समय मैं कै आढ़त के मालिक छेलै । आयकल खगी गेलों छै । परिवार बड़ों छै, ये लेली हुनी थोड़ों तंगी में रहै छै । मतरकि दिलों के बड़ी राजा छै । फेनु तोरा ई सबसें लेना-देना की ? तोरा तें दामाद सें मतलब होना होतौ ।....बहिन, आबें तोरों मर्जी पर सब कुछ निर्भर करै छै ।...दहेज कौड़ी वास्तें भी तोरा नै सोचना छै । हम्में जानै छियै कि हुनी जतना टा मांग करतै, ऊ हम्मीं दियें पारौं ।

बच्ची के जिनगी पर सें कत्तें बड़ों भार उतरी रहलों छेलै । खुशी सें ओकरों आँखी सें लोर चुहचुहाय पड़लै । कुछ नै सोचै पारलै। बस एतनै ओकरों मुँहों सें निकललै 'जे काम बिजली बाबू के छेलै वहू काम तोंही करी दिखैलौ । एत्तें बड़ों ऋण तोहें हमरा पर छोड़ी रहलों छौ कि है जन्मों मैं तें नहिये, अगलौ जन्म मैं हेकरा चुकाना मुश्किल होतै ।

—अरे हेनों कुछुवे बात नै छै बहिन । आदमी कुछुवे नै करै छै, सब ईश्वर के इच्छा छेकै । आदमी तें ऊ इच्छा के दोहे भर वास्तें छै। ....तें हम्में की है मानियै, तोरा ई संबंध पसन्द छै ?

—बड़ों भाय, हमरा बस एक्के चिन्ता रही गेलों छेलै, ई बिजली के शादी । वहू दुख आय तोहें कृष्ण बनी कें हरि लेलौ ।

—तें ठीक छै, हम्में यही महिना मैं फेनु ऐवौं आरो अश्वघोष कें लैकें पूर्णियां जैवौं । तब तांय हम्में रामसेवक बाबू सें आरो बात करी लियै । तोरा कोय परेशानी नै होथौं बहिन, सब व्यवस्था हम्में ठीक करी लेबै । बस एक्के व्यवस्था तोहें आज हमरा लें करी दियों । बहुत दिनों सें बढ़ियाँ खाना नै खाबें पारलें छी आरो तोरों हाथों के खाना खैलों आदमी तें धरती पर स्वर्गो सें उतरी ऐतै । धनबादों मैं तोरों हाथों के खैलों भूलै नै पारै छियै ।...बस तोहें रोसै मैं जुटी जा, हम्में तोरों आफिसर चन्द्रकान्त सिंह सें मिलिकें आवी जाय छियौं । बस घंटा भरी में आवी रहलों छियौं । हुन्नें बच्ची रोसै में गेलै आरो हिन्नें श्रीवास्तव

बाबू चन्द्रकान्त सिंह कन ।

:: २८ ::

बच्ची कें ई बातों के कुछुवे ज्ञान नै छेलै कि जों श्रीवास्तव बाबू ओकरों बराबर ध्यान राखी रहलों छेलै, तें सेमल हुनका सें कहीं जादा ओकरों एकेक क्षणों के निगरानी ।...आय सेमल सांझकिये सें उदास छै। पटना सें ओकरों मित्र टेलीफोन द्वारा खबर भेजलें छै कि श्रीवास्तव बाबू नाम के कोय अधवेसु बिजली के बीहा-शादी पक्की करी कें ऐलों छै । सेमल कें कुछ समझै मैं नै आवै छै कि वैं की करें ।

—देख बेटा, हेना गुमसम आरो चुपचाप बैठलों रहला सें कुछ काम नै चलथौं जों कहीं दहेज में पतोहू ई मकान आरो जमीन लिखी देलखौं तें भीख मांगै के नौबत आवी जैतै ।...अरे हम्मू औरते छियै । औरत के मोंन-मिजाज खूब जानै छियै । कत्तों रणचण्डी काली बनलों रहें, एकबार नरम बनी कें दिल जीतै के कोशिश मरद करै तें वही औरत मोम-मोम । हम्में कहै छियौं तोहें पटना जा आरो दिल जीतै के कोशिश करों । कहौ कि बिजली हमरों बेटी छेकी, हम्में लिखा-पढ़ी सें लै कें कन्यादान तक करवै । हेकरा मैं समाजों के हेनों के आदमी होतै, जे तोरों बात के साथ नै देथौं ।''

—देख माय, तोहें की समझी रहलों छैं, ऊ बात अबकी नै हुवें पारतै । रणचण्डी कें अबकी मनाय के मतलब छै, आपनों मूंडी कटवैवों। हम्में खूब समझै छियै कि ई हालतों मैं की करना चाहियों । तुलसी गलती नै कहलें छै । ढोल आरो नारी मार खाय के अधिकारी । तोहें चिन्ता नै करैं माय । हम्मू कल्हे पटना जाय छियौ आरो बंदूक के जोरों सें कागजों पर लिखाय कें लानै छियौ । ओकरों मरलों बाबुओ

चाहतै कि है मकान आरो जमीन नतनी के नामों पर लिखी दियै ऊ नै हुवें पारतै ।....आबें मनाना-जुनाना हमरों वशों के बातो नै छै ।''

—मतरकि बेटा कुछ हेनों-होनों नै होय जांव कि लेनी के बदला देनी पड़ी जाँव । बंदूक में गोली-ओली राखी कें नै जइयों । काँही भूल-चूकों सें छुटिये जाँव तें माय-बेटा दोनों जेले में सड़वों आरो है हवेली सुन्ने रहथौं ।''

—तोहें चुप रहें माय । घोंर जनानी बिना खाली रहें पारें मतरकि बंदूक गोली के बिना की ? जों वै कागजों पर दसखत नै करतै तें ओकरों बेटी कें पहलें ओकरों अर्थिये निकलतै । आरो कंधा देतै ओकरें नया साँय पूर्णानन्द श्रीवास्तव ।''

—हमरों बात मानों तें अभी रुकी जा बेटा । पहलें ई सब जानी-सुनी लें कि आखिर बीहा-शादी ठीक होय छै कि नै ? जों बीहा में कोय भाँगटों लागी जाय छै तें ई कुहराम मचैला सें की फायदा । कोन मारै वैं हमरों सुखों पर छीना-झपटी करी रहलों छै । जों है मालूम होय जाय छै कि बीहा-शादी आपनों पैसा सें करी रहलों छै, तें तोरों चुप्पे रहला में फायदा छौं ।

नै, फैसला आबें होइये कें रहतै । रोज-रोज मनों में महाभारत होइये जाय । पटना सें तें यहू खबर ऐलों छै कि है शादी जेठे में होतै आरो जेठ आवै में अभी नौ-दस महिना छै । है आसिन चली रहलों छै। एत्तें दिन हम्में पागल नै बनलों रहै सकै छी ।

—बेटा कत्तो भूख लागलों रहें, जानवरो चारो गोड़ सें नै खाय छै । धीरज, धर्म, मित्र आरू नारी, आपत काल परखिए चारी । धैर्य धरों सब ठीक होतै ।

आरो भाय के बात सुनी सेमल सचमुचे स्थिर हुवें लागलों छेलै। ओकरों उफान बिन्डोवों बनी कें शांत होय गेलों छेलै ।

:: २६ ::

नहिं आये हो हमारे श्याम ।
सावन न आये भादो न आये
बहि चलि नदिया उमड़ि चलि नारे ।
क्वारौ न आये कार्तिक नहिं आये
उई गई जुन्हैया छिटकि गये तारे ।
अगहन न आये पूस न आये
तर काँपै गड्डुआ ऊपर काँपै सेज ।
माघ नहिं आये फागुन नहिं आये
उड़त गुलाल खेले सखि फाग ।
चैतो न आये वैशाखो न आये
फरि गये अमुवा फूलि रहे टेसू ।

सेमल नै ऐलों छेलै । जेठ ऐथैं-ऐथैं बच्ची पहुँची गेलै । बच्चिये भागलपुर ऐलों छेलै, सेमल सें मिलै लें ।

एकदम पड़पड़िया धूपों मैं तमतमैलों । आधों कुम्हलैलों फूल जेना झुलसी कें रहि गेलों रहें । रिक्सा सें नीचे उतरथैं बच्ची सीधे ऊपर चढ़ी ऐलों छेलै । नीचें के कोठरी मैं ओघरैतें सासें ओकरा ऊपर चढ़तें देखलें छेलै मतर कुछ टोकलें नै छेलै । मनों मैं ढेर सिनी शंका उठलों छेलै, पर चुपचाप पड़ले रहलै । शायद ई सोची कें कि चिड़ियाँ आपने आप पिंजड़ा मैं आवी गेलों छै, ऊ करवट बदली कें निश्चिन्त सुती रहलै।

जखनी बच्ची ऊपर पहुँचलै तखनी तपासों सें परेशान सेमलो ओघराय के कोशिश करी रहलों छेलै । बच्ची कें सामना देखलकै तें उठी कें बैठी गेलै आरो बड़ों रुक्खों बोली मैं कहलकै,

—कहों, बहुत सालों बाद यहाँकरों ख्याल ऐलौं । की, बदलिये तें नैनी कराय ऐलों छों ? आकि कोनों विपत्ति ऐलों छौं ?

—कैन्हें, पूर्णानंद श्रीवास्तव बाबू ई धरती पर नै रहलात की ?''

—सुनों, हेनों बात नै करों । हुनी तभियो ई धरती पर रहतै, जबें हम्मू नै रहवै । हुनी तें हमरा ले ऊ करलों छै जे हमरों.....।

—हों-हों, कहों नी कि जे हमरों सांय नै करलें छै । की ? आखिर ऊ सांय जे छेकौं ।

—शरम नै आवै छौ तोरा हेनों शब्द मुँहों सें निकालतें । हुनी तें हमरों भाय छेकै, भाइयो सें बढ़ी कें । आय हुनी नै होतियै तें नै जानौं हम्में बाजार में बैठलों रहतियैं कि सड़कों पर । तोहें देवता आदमी कें दुबलों छौ, तोहीं हेकरों फल जानवा । हम्में गलती करलौं कि यहाँ ऐलौ । हम्में जाय छियौं आरो आबें तोरों बिना बिजली के बीहा होतै।

ई कही बच्ची पीछू घुमी दुआरी दिस मुड़वे करतियै कि सेमलें कोना मैं पड़लों बन्दूक उठाय लेलकै, आरो हाथ घसीटतें दूसरों कोठरी मैं लै गेलै । बच्ची के सौंसे देह घामों सें नहावें लागलों छेलै आरो सेमल बन्दूक ओकरों ऊपर तानलें चिकरी रहलों छेलै,

—ई तें जानवे करै छियै कि तोहें आबें हमरों साथ नै, श्रीवास्तवें के साथे रहैवाली छौ । मतरकि हेकरों पहले सामना में कागज राखलों छै । तोरा कुछुवे नै करना छौं, बस एतनै करों कि कागज के नीचे में दसखत करी दौ । जों जानै लें चाहै छों कि ई कागज कथी के छेकै तें जानी ला । हों-हों जानिये ला ताकि कल है न कहियो कि अनजानों में राखी कें दसखत कराय लेलकै ।...ई कागज में लिखलों छै कि हम्में, यानी तोहें है हवेली आरो सबौरवाला दसबिघिया जमीन हमरों नामें खुशी सें लिखी रहलों छों आरो आय सें तोहें नै, हम्में ई सम्पत्ति के मालिक होवै ।...बोलों ई कागज पर दसखत करै छों कि नै, नै तें ई बन्दूके दसखत करैथौं ।

—करवै ।

बच्ची आरो कुछुवे नै बोलें पारलै । ओकरों आँसू आरो धाम दोनों मिली कें ओकरा तरबतर करी रहलों छेलै । ऊ आहिस्ता सें उठलै आरो बैठले-बैठले कागज कें हाथों मैं लै लेलकै । कागज लेना छेलै, कि सेमलें एक दिस पड़लों कलम के लातों सें ओकरों दिस ठेली देलकै ।

बच्ची कागजों पर नजरो नै दौड़लकै, खाली एक दिसों में दसखत करी देलकै । दसखत-तारीख लिखथैं सेमलें झपटी कें ऊ कागज आपनों हाथों मैं करी लेलकै । आरो कहलकै,

—आबें तोहें पूर्णानन्द कन रहों या अवधूतानंद कन, हमरा सें कोय मतलब नै ।''

—मतरकि जाय सें पहले एगो आरो सम्पत्ति बची गेलों छौं, आय वहू सम्पत्ति हम्में चाहै छियै कि तोरों नामे लिखी दियौं । नै जानौं, है लिखा-पढ़ी के हेनों वक्त फेनू आबें पारें की नै ।

—ऊ की छेकै ?

सेमल के आवाजों मैं आभियो होनै कड़वाहट छेलै ।

—तोरों बेटा हमरों पास छौं । कोय दोसरा के नै छेकै । तांत्रिक के आशीर्वाद सें पैलों तोरों बेटा ! हम्में जानै छियै कि वहू सम्पत्ति हम्में नै राखें सकवै । तांत्रिक के आशीर्वाद तोरे होथौं हमरों नै हुवें पारें । जबें पतिये नै होतै तें पुत की होतै !....होइये जैतें तें तोरों अंश हमरा जिन्दगी भर सुक्खों सें नै रहें देतै । बापों के लहू बेटा में बोलवे करै छै, बोलवें करतै । ई हमरों आत्मा कही रहलों छै।

बच्ची के आँखी सें लोर रहि-रहि टपकी रहलों छेलै मतरकि ओकरों कहै में आवें कहीं कपसवों या घबराहट नै रहि गेलों छेलै । है सब परिवर्तन तुरत्ते केना होय गेलों छेलै, बच्चियो कें नै मालूम । बस ऊ तें बोललों चल्लों जाय रहलों छेलै । तोरा हमरा पर पूर्ण अधिकार छेलौं । वहीं तोरा नै चाहियों, तोरा चाहियों खाली हमरों सम्पत्ति । शादी के बाद सें हम्में ई बुझतें आवी रहलों छियौं, मतरकि कुछ नै कहलियौं । कुछ नै कहलियौं । तोरा परमेश्वर छोड़ी कें आरो की जानलियौं ? विश्वास कें खंडित करलें छों । औरत के सहजता-समर्पण कें छललें छों । तोहें हमरों परीक्षा सीते रं लेतें ऐलों छों । मतरकि हमरा हेकरों कोय दुख नै । तोहें सीता कें धरती में गाड़ी जो सुखी होय लें चाहै छों, तोरों मोंन पूरौं । मतरकि समैयो बड़ी त्यागी होय छै । देर-सबेर हमरों-तोरों न्याय लिखलों जैतै आरो दोनों कें नीति-अनीति के

फोॅल के भागी बनै लें पड़तै ।' धरती के देवता बेमान बनी जाय तें बनी जाय, ऊपरों के देवता केन्हों कें बेमान नै बनें पारें । कहतें-कहतें बच्ची वहाँ सें उठी गेलों छेलै आरो अलमारी खोली कें आपन्हैं एकठो सादा कागज निकाली लेलें छेलै, आरो कागज पर ई लिखी कि अश्वघोष पर सेमल जी के पूर्ण अधिकार छै, जेकरा माता रूपों मैं हम्में पाललें ऐलियै, आय वही पुत्र पर हम्में सेमल जी के पूर्ण अधिकार के घोषणा करै छियै ।' कागज के नीचे एक दिस मैं दसखत करी सेमलों ओर बढ़ाय देलें छेलै । सेमलो ऊ कागज कें बिना राग-द्वेष के लै लेलें छेलै।

मतरकि बच्ची के सामना खड़ा होय के समरथ सेमल के पास नै रहि गेलों छेलै । शायद यही कारणें आपनों बंदूक लेलें पीछू वाला कोठरी में चल्लों गेलों छेलै ।

सेमल के बाहर निकलथैं बच्चियो बाहर निकलै लें तैयार होय गेलै । ओकरा आपनों घोॅर श्मशान लागें लागलों छेलै, जहाँ लहाश आरो कंकाल के सिवा कुछ नै रहें । घरों के एकेक सामान ओकरा फेकलों हड्डी हाड़ नाँखी दिखावें लागलों छेलै आरो पलंग-खाट जेना चिता आरो चचरी । ऊ कांपी उठलै आरो क्षणै मैं कोठरी सें बाहर निकली मुख्य हौल में चल्लों ऐलै जहाँ सें नीचें जाय लें रास्ता खुलै छेलै।

वैं एक बार हौल के चारो दिस आपनों आँख घुमैलकै । हौल के बीचोबीच छत्तों सें लटकलों शीशा के झाड़-फानूस खतम होय चुकलों छेलै आरो बड़ों-बड़ों अलमारी में सजलों पीतल-कासा के साज-सजावट के सामानो । ओकरा कुछुवे दुख नै होलै । परों के सम्पत सें मोह केन्हों!

बच्ची हौल सें बाहर निकली ऐलै आरो सीढ़ी के नगीच आवी कें एक मिनिट रुकी गेलै । आपनों दोनों हाथों के चूड़ी कें बारी-बारी सें कुछ देर लेली देखतें रहलें फेनू झब-झब सीढ़ी सें नीचें उतरतें चललों गेलै । बिना एक्को बार पीछू मुड़लें सीधे सड़कों पर चल्लों ऐलों छेलै। ...रात कें रेल पर बैठी जबें बच्ची पटना चल्लों छेलै तबें ओकरों देहों में तनियो टा तज नै बची गेलों छेलै । एकदम निढाल पड़ी रहलों छेलै

आपनों सीटों पर । ओकरों लें आस-पास के लोग, शोरगुल जों ओकरा कुछ लागै तें बस यही कि ऊ फगदोलों पर सुतलों छै आरो फगदोलों के साथ-साथ चलतें लोग 'राम नाम सत' के आवाज करलें जाय रहलों छै। बच्ची कें ई सब सोची अच्छे लागी रहलों छेलै । आखिर आबें जीतों रहै के ही की मानी ? गाड़ी जों-जों आगू बढ़लों जाय रहलों छेलै, बच्ची कें बस हेने लागी रहलों छेलै जेना ऊ मशान के आरो नगीच पहुँचलों जाय रहलों छै आरो देखथैं-देखथैं...। ओकरों ठोरों पर एक फिक्का हँसी के साथे आँखी मैं लोर डबडबाय ऐलै ।

:: ३० ::

....बिजली के बीहा के बीस बरस बाद । बच्ची आपनों नौकरी-चाकरी छोड़ी कें काशी बसी गेलों छै । विश्वनाथ मंदिर के नगीच एक टुटलों-फुटलों मकान के एक कोठरी में । जहाँ धूप-रौशनी के दरश नै छै । कोठरी के दीवार चकत्ता मैं जग्घों-जग्घों से झड़ी गेलों छै । मन भिनकाय दै वाला दुर्गन्ध सालो भरी ई कोठरी मैं बनले रहै छै। मतरकि बच्ची कें आवें कुछुवे नै बुझावै छै । नया-नया ऐलों छेलै तें ओकरा छाँट होय होतै, हेनै बुझावै छेलै । पर आवें ओकरा हेनों कुछुवो नै बुझावै छै ।

बच्ची कें ई मकान ओकरों ददिहर परिवार के एक संबंधी दिलवाय देलें छै । यही कोठरी में बैठलों-बेठलों बच्ची देवता सिनी के चित्र लुग माला फेरतें रहै छै आरो कुछ-कुछ भजन-कीर्त्तन । पर बिछावन पर जैथैं ओकरों आँखी मैं बिजली आरो अश्वघोष के तस्वीर नाचें लागै छै । ...शादी के बाद बिजली गेलै तें घुरियो कें देखैलें नै ऐलै. ..खैर बेटी तें आन के धोंन होय छै ।...बेटे कहाँ हमरों होलै ?

बच्ची के आँख मैं एक तस्वीर घुमै छै तें दूसरों, तेसरों, चौथों साथे-साथ घूमें लागै छै ।...बिजली के शादी के ठीक दुए महिना बाद अश्वघोष के बाबू आवी गेलों छेलै, पाँच आदमी साथें वकीलों लेलें-देलें ।. ...वैं आपन्हैं अश्वघोष कें आगू करी देलें छेलै ।....कत्ते कपसी-कपसी कें वैं हमरौ साथैं चलै लें कहलें छेलै, आरो कहलें छेलै—माय तोहें जल्दिये आबी जइयैं, नै तें हम्में भागी कें आवी जैवौं ।...मतरकि कहाँ कुछुवे होलै ।...आरो दस साल बाद वैं एक्के साथ दू खबर सुनलें छेलै. .. श्रीवास्तव बाबू के इन्तकाल आरो अश्वघोष के बीहा ।...पहलें बीहे के खबर मिललों छेलै, बाद मैं हुनकों इन्तकाल के समाचार ।...ऊ खुशो नै हुवें पारलों छेलै कि कानतें-कानतें ओकरों दोनों आँख पलाशों के फूल बनी गेलों छेलै ।...हुनकों मिरतु सें दुखित होय कें नौकरी छोड़वों आरो सब कुछ सें विरक्त बनी घरों मैं कपसतें रहवों ।...सब कुछ ।

बच्ची चाहै छै अनठाय कें सुती रहें मतरकि ओकरों दिमागों सें यादों के जुड़लों-जुड़लों तस्वीर हटतै नै छै ।...वैं एक संबंधी हाथें अश्वघोष कें खबर देलें छेलै, एकबार देखी जाय लें । मतरकि अश्वघोष नै ऐलों छेलै ।...संबंधिये हाथें कही भेजलें छेलै—आय माय दुख काटी रहलों छै तें हेकरा में सरासर मैइये के गलती छै । माय कें चाहियों कि बाबू सें आबी कें क्षमा मांगी लौ ।''...संबंधी यहू कहलें छेलै—'अश्वघोष एक बच्चा के बाबू बनी गेलों छै ।...कनियैन तें मेमेसाहब छौं, मेमसाहब । जेन्हों देखै में, होनै पढ़ै-लिखै, सिलाय-फोड़ाय करै मैं ।...ओकरों । मोंन कत्तें बेचैन होय गेलों छलै आपनों बेटा-पतोहू-पोता कें देखै लें ।...आरो महिने बाद ऊ आपनों सब कुछ दान-दून करी कें काशीवास करैलें आवी गेलों छेलै, जीवन के असीम शांति पावैलें ।

बच्ची आपनों जिनगी ईश्वर के गोड़ों पर नेछावर करी देलें छै। भजन करते-करतें बीचों-बीचों मैं धरती सें उठाय लैकें बिनतियो प्रभु सें करतें चलै छै । मतरकि प्रभु ओकरा सें उदासे छै । यै सें ओकरा ईश्वर के प्रति नाराजगी छै, यहू बात नै छै । बच्ची कें विश्वास छै, एक दिन

प्रभु ओकरों विनती जरूरे सुनतै आरो ओकरों जिनगी के सब ताप खतम होय जैतै । पता नै ई सब कहिया होतै । बच्ची रोज एकदम भिनसरे उठी कें निंदवासलों देवी-देवता कें जगाय आवै छै आरो घंटो गंगा के लहरैतें धार कें देखतें रहै छै । पहलें तें बच्ची कें ई सोचिये काफी संतोष होय जाय छेलै कि मरै वक्ती काशी के गंगा-जोंल ओकरों मुँहों मैं पड़तै आरो ओकरा खंड गोलोक मिली जैतै । मतरकि यहू विश्वास आबें ओकरा हरखित नै करै छै । बच्ची कें गंगा वैतरणिये रं दिखावै छै, पर यै पार तांय लै जाय वाला कोय नै देखी कें ऊ हहरी उठै छै । सीलन भरलों कोठरी मैं जागलों-निदंवासलों बस यही सोचतें रहै छै कि ई जिनगी भी की जिनगी जेकरा नै भूलोक के सुख नसीब छै, नै गोलोक के ?

दिन आवी कें रोशनी अग-जग से उलझी जाय छै आरो रात आवी कें गुजगुज अन्हार । मतरकि आँख खुललों रहलों पर बच्ची कें नै तें रोशनिये बुझावै छै आरो नै तें अन्हार । बस धरती आरो आकाश के स्मृति-आशा रेगिस्तान में विन्डोवों नाँखी ओकरों मनों में दौड़तें हाँफतें रहै छै ।

●●

आभा पूर्वे : एक संक्षिप्त परिचय

जन्म तिथि : २३ अक्टूबर १९६४ ई.

जन्म स्थान : भागलपुर

माता का नाम : जीवनलता पूर्वे

पिता का नाम : रूद्रदत्त पूर्वे

शिक्षा : एम.ए.(गोल्ड मेडल), पी-एचडी

प्रकाशन : देश भर की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित

संकलनों में रचनाएँ : चम्पा फूलै डारे डार, आधुनिक अंगिका काव्य कोश, हे दशरथ के राम आदि दर्जनाधिक संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित

सम्पादन : 'नया हस्तक्षेप' (अनियमितकालीन पत्रिका) के अलावा १. गीत-गंगा (अंगिका गीत संग्रह), २. नवगीतकार मधुसूदन साहा, ३. अर्द्धनारीश्वर (हिन्दी कहानियों का पंजाबी अनुवाद), ४. जीवनलता पूर्वे : शांत नदी की अनंत यात्रा (अंग महिला साहित्यकार संसद, भागलपुर), ५. अंगिका लोकसाहित्य : एक अध्ययन (अंगिका संसद, भागलपुर), ६. केकरों चाँद केन्हों चाँद (अंगिका संसद, भागलपुर), ७. खोई हुई लड़की का खत (अंगिका संसद, भागलपुर), ८. डॉ. अमरेन्द्रः व्यक्तित्त्व और वागर्थ (कामायनी, भागलपुर), ९. डॉ. अमरेन्द्र : संदर्भ और साहित्य (समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली)

प्रकाशित पुस्तकें : १. अंतहीन वैतरणी (अंगिका उपन्यास), २. चन्दन जल न जाए (कहानी-संग्रह), ३. शरीष की सुधा (कहानी-संग्रह), ४. जब-जब झरे शृंगार (दोहा-संग्रह), ५. गुलमोहर का गाँव (कविता-संग्रह), ६. नागफनी के फूल (गजल-संग्रह), ७. शिशिर की धूप (कविता संग्रह), ८. नमामि गंगे (कविता-संग्रह), ९. ताँका शतक, १०. कुँवर विजयमल (हिन्दी उपन्यास)

सम्पर्क : शरतचंद पथ, मशाकचक, भागलपुर (बिहार)